क्या रेत में से तेल निकलता है?

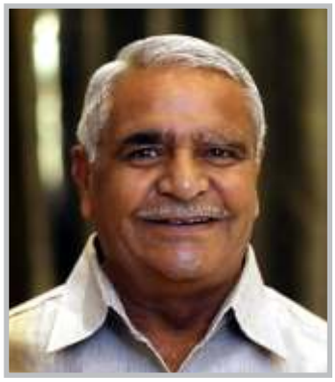

यह एक पुराना मुहावरा है? किन्तु आज हम इस पर ही चर्चा करेंगे। हाँ! रेत के भंडार रेगिस्तान में बहुत तेल निकलता है। मात्र इतना ही नहीं पानी के अथाह भंडार सागर की तलहटी से भी तेल निकलता है। भारत के अरब सागर में भी तेल निकलता है। लेकिन हम अब मुहावरे की मूल भावना पर बात करते हैं। साहित्यकार यह कहना चाहता है जहाँ कोई संभावना न हो वहाँ कुछ पाने की संभावना तलाशना व्यर्थ है क्योंकि वहाँ सफलता की उम्मीद नहीं है। किन्तु यहाँ महत्त्वपूर्ण यह है कि हम संभावनाओं की पहचान किस रूप में करते हैं?

लगभग 1000-800 वर्षों के पुराने अंतराल में जब भारत में गुलामी का दौर था, परिस्थितियाँ जटिल थी। संपन्न वर्ग के कुछ दानवीर श्रेष्ठीगण ही तीर्थों के संरक्षण एवं विकास की जिम्मेदारी लेते थे, आवागमन के साधन बहुत कम होने के कारण तीर्थ यात्रायें भी संघों में होती थी। इससे साधन, सुविधा, एवं सुरक्षा तीनों मिलती थी। आज आवागमन के साधनों की प्रचुरता एवं गति ने स्थितियाँ बदली हैं।

आज हर व्यक्ति अपनी इच्छाओं एवं भावना से मनवांछित तीर्थों की यात्रा करने लगा है। तीर्थों के संरक्षण एवं विकास के कामों के प्रति जागरूकता बढ़ी है। दान की प्रवृत्ति भी बढ़ी है। हर व्यक्ति तीर्थों के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह न्यूनाधिक अंशदान से करना चाहता है। भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक योजना को मिल रहा उत्साहजनक प्रतिसाद इसका ही प्रतिफल है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम नवोदित युवा वर्ग की क्षमताओं को पहचाने। उनसे सम्यक् संपर्क एवं चर्चा कर योजनायें बनाये। समाज के प्रोफेशनल्स एवं युवा उद्यमियों में बहुत क्षमतायें हैं, बुद्धि है, दान देने की शक्ति है, व्यापक संपर्क हैं। बस हम उनके साथ बैठकर योजनायें बनायें उन्हे अपने साथ ले, कमेटी में स्थान दें तो कोई कारण नहीं कि वे हमें सहयोग नहीं करेंगे। हमारे युवावर्ग में भी तीर्थों के प्रति लगाव है, वे भी अपनी संस्कृति के प्रति जागरूक हैं उन्हें प्रेम से विश्वास में लेना होगा। आप क्षेत्रों में आवास, शुद्ध भोजन, जलपान आदि की न्यूनतम सुविधायें जुटायें उनको बढ़ाने में युवा जरूर आगे आयेगे, ऐसा मेरा मानना है। आप मजबूती एवं संकल्प के साथ आगे बढ़ें, **तेल जरूर निकलेगा जहाँ आत्मविश्वास विश्वास उन्हें फिर चिन्ता क्या साधन की।** हमने युवा प्रोफेशनल्स की शक्ति को अब तक पहचाना ही नहीं है।

शुभकामनाओं सहित, जय जिनेन्द्र।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

बंधुओं-भगनियों

सादर जय जिनेन्द्र !

हम-आप सब विनम्र नयनों से आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को याद कर रहे हैं, आचार्य श्री की समाधि को एक वर्ष पूर्ण हो गया है जगह-जगह हम सभी ने अपने श्रृद्धासुमन आचार्य श्री के चरणों में अर्पण किये हैं। आचार्यश्री की समाधिस्थली डोंगरगढ़ (चन्द्रगिरि तीर्थक्षेत्र) में निर्यापक पूज्य मुनि श्री समतासागर जी के मंगलसानिध्य में आचार्य श्री का प्रथम समाधि दिवस दिनांक ०६ फरवरी २०२५ को मनाया गया जिसमें भारत के माननीय गृहमंत्री जी ने आचार्य श्री के प्रति अपने श्रद्धासुमन समर्पित कर अपने उद्गार व्यक्त किये और आचार्य श्री के नाम से १०० रु का सिक्का जारी भी किया है। माननीय श्री अमित शाह जी ने आचार्य श्री द्वारा देश हित में और भारत के नाम को भारत रखने और बोलने पर जो बल दिया है उसका उल्लेख किया है जिसको प्रधानमंत्री जी ने तत्काल संज्ञान में लेते हुए जी-२० की मीटिंग के निमंत्रण में राष्ट्रपति आदि महानुभावों को इंडिया नहीं बल्कि "भारत" लिखा है इसका उल्लेख श्री अमित शाह जी ने किया है। हम माननीय अमित शाह एवं यशस्वी प्रधानमंत्री जी को इस कार्य के लिए धन्यवाद भी ज्ञापित करते हैं । साथ ही मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में मुनि श्री प्रमाणसागर महाराज जी के मंगल सानिध्य में भी आचार्य श्री का समाधिदिवस मनाया गया जिसमें मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री जी ने आचार्य श्री को याद करते हुए आचार्य श्री को लोकसंत बताया और उनकी समाधि तिथि को प्रत्येक वर्ष मनाने की घोषणा की है साथ ही आचार्य श्री जी का भोपाल में एक विशेष स्थल बनाने की भी घोषणा की है, मैं मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्रीमान मोहन यादव जी को अपना धन्यवाद प्रकट करता हूँ। पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी के चरणों में अपनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुए यह प्रार्थना करता हूँ कि आपका मार्ग हम सभी के लिए प्रशस्त होवे।

हर्ष है कि नवग्रह तीर्थ वरूर में भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक संपन्न हुआ है जिसके लिए गणाधिपति, गणधराचार्य पूज्य आचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज ससंघ, राष्ट्रसंत आचार्य श्री गुणधरनंदी जी महाराज ससंघ एवं सरस्वताचार्य आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज का मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ मैं गुरुवरों के प्रति अपना नमोस्तु पूर्वक नवग्रह तीर्थ वरूर के समस्त पदाधिकारियों सहयोगीगणों के प्रति अपना धन्यवाद प्रगट करता हूँ कि आपके सहयोग एवं कार्यकुशलता और समर्पणता से यह अनूठा और भव्य

पंचकल्याणक महोत्सव अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित हो सका आप सभी को बधाई ! पंचकल्याणक के इसी क्रम में मुंबई के गुलालवाडी मंदिर के २०० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में मुंबई के आज़ाद मैदान में भी भव्यपंचकल्याणक प्रतिष्ठा संपन्न हुई जिसमें मुझे उपस्थित होने के अवसर भी प्राप्त हुआ साथ पूज्य गुरुदेव मुनि श्री अमोघकीर्ति एवं मुनि श्री अमरकीर्ति का आशीर्वाद ग्रहण कर णमोकार क्षेत्र पर होने जा रहे भव्यपंचकल्याणक के बारे में चर्चा कर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

गत दिनों हमारे समाज के साथ एक दुखद घटना घटी जिसका हमें अत्यंत खेद एवं हृदय में व्याकुलता है। बागपत उत्तरप्रदेश के बडौत में मानस्तम्भ परिसर में आयोजित भगवान आदिनाथ के निर्वाण दिवस के अवसर पर निर्वाण लाडू चढ़ाने आये श्रद्धालुओं के साथ हुई दुर्घटना से हमारे ७ पुण्यात्मा बंधुओं का निधन हो गया है और करीब ६० श्रद्धालुगण गंभीर रूप से घायल हुए हैं इस घटना ने हमारे हृदय को झकझोर दिया है। पुण्यात्मा दिवंगत आत्माओं के प्रति मैं अपनी श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ एवं शोकाकुल परिवारों के प्रति मेरी पूर्ण संवेदनाएं हैं। साथ ही भगवान से प्रार्थना है कि इस दुर्घटना में घायल हुए सभी महानुभावों को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होवे और इस प्रकार की घटना की कभी भी पुनरावृत्ति न होवे।

हमारा समाज एवं समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों, ट्रस्टियों से विनम्र आग्रह है कि सामूहिक कार्यक्रमों, आयोजनों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है अतः समाज के किसी भी सामूहिक कार्यक्रमों के पूर्व अच्छी तरह से निरीक्षण परिक्षण किया जाए साथ ही उपस्थित सभी श्रद्धालुओं को भी आयोजक कर्ताओं की व्यवस्थाओं में सहयोग अवश्य करना चाहिए और सभी नियमों का पालन भी करना चाहिए जिससे सभी आयोजक सफल एवं निर्विघ्न संपन्न हो सकें।

आप सबकी मंगलकामनाओं के साथ,

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

झलक जैन संस्कृति: आदिनाथ से महावीर

चैत्र कृष्ण नवमी (23.03.2025) को भगवान ऋषभदेव की जयन्ती एवं चैत्र शुक्ल त्रयोदशी (10.04.2025) को महावीर जयन्ती (महावीर जन्म कल्याणक) आ रही है। इस 19 दिवसीय अंतराल को पूज्य संतों की प्रेरणा से जैन समाज अनेक स्थानों पर उत्साहपूर्वक मनाता है। धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों की एक श्रृंखला इन 19 दिनों में चलती है। इससे असीम धर्मप्रभावना होती है। मार्च का अंक जब आप लोगों के हाथों में पहुंचेगा तब तक कार्यक्रमों के संयोजन का समय शेष नहीं बचेगा इस कारण मैंने फरवरी अंक में ही इस विषय की चर्चा की है। इन्दौर सहित देश के अनेक नगरों में इस अवधि (आदिनाथ जयन्ती से महावीर जयन्ती तक) में निम्नांकित में से एक या अधिक आयोजन होते हैं।

1) प्रभात फेरी
2) प्रतिदिन मन्दिरजी में एक विधान
3) ग्राम या कॉलोनी के घरों में प्रतिदिन भजन/स्तोत्रों के पाठ
4) भजन, नृत्य, भाषण, चित्रकला, निबंध आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन
5) संगोष्ठी/परिचर्चाओं/व्याख्यानमालाओं का आयोजन
6) युवा, महिला/पत्रकार सम्मेलनों का आयोजन
7) रथ यात्राओं, पालकी यात्राओं का आयोजन
8) संतों के विशेष प्रवचन
9) स्वास्थ्य परीक्षण/निदान शिविरों/योग शिविरों का आयोजन

भगवान मुनिसुव्रतनाथ दि. जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम, जहाजपुर में पत्रकार महासंघ के सहयोग से पत्रकार सम्मेलन (22-23 मार्च) द्वारा इन गतिविधियों की शुरुआत हो रही है। इन्दौर की तो अनेक कालोनियों में आदिनाथ जयन्ती से प्रभातफेरियाँ शुरू हो जाती हैं। आप भी उक्त आयोजनों में से अपने-अपने तीर्थ, ग्राम, कॉलोनी की अनुकूलता के हिसाब से अधिकाधिक आयोजनों का निर्णय करे एवं शीघ्र ही अपनी-अपनी कमेटियों से उनकी सहमति लेकर पूरी रूपरेखा की घोषणा करें।

स्वस्तिधाम-जहाजपुर सामाजिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र बनता जा रहा है। अक्टूबर में वैज्ञानिक सम्मेलन (19-20 अक्टूबर) एवं जनवरी में शास्त्र संरक्षण कार्यशाला (17-19 जनवरी) का डॉ. संजीव सराफ के संयोजकत्व में सफल आयोजन हुआ। पूज्य गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी की सोच एवं दृष्टि सकारात्मक एवं स्पष्ट है।

पत्रकार सम्मेलन में पधारने वाले पत्रकार बंधुओं से भी मैं अनुरोध करूंगा कि वे भारतीय संस्कृति के विकास में जैनाचार्यों के योगदान को रेखांकित करने वाले विशेषीकृत लेख तैयार करें। उनक लेख प्रमाणिक किन्तु बोधगम्य हों भारतीय ज्ञान परम्परा के हर क्षेत्र में जैनाचार्यो का योगदान है। मात्र उनको प्रकाश में लाने की जरूरत है। यदि ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में हम जैनाचार्यों के योगदान को प्रकाशित करेंगे तभी जैनत्व का गौरव बढ़ेगा। केवल भंडारों या मन्दिर निर्माण से काम नहीं चलेगा। तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत महासंघ ने विगत दिनों भारतीय संस्कृति के विकास में जैनाचार्यों का योगदान शीर्षक कृति प्रकाशित की है।

आज धर्मनिरपेक्ष बनने की होड़ लगी है। हमारे युवा जैनेतर कार्यक्रमों में आगे से आगे बढ़कर हिस्सा लेते हैं। यह अच्छी बात है।

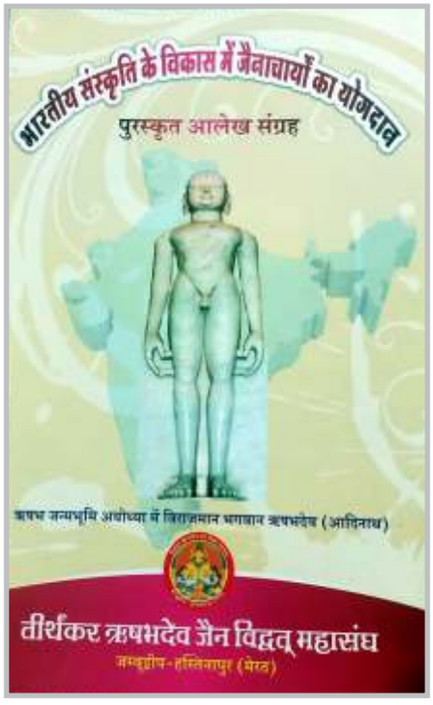

इससे समाज की प्रतिष्ठा बढ़ती है। किन्तु पहले हम अपना घर सम्हाले एवं सुधारे फिर पड़ोसी की मदद करें। मैं एक ऐसा ही कार्यक्रम युवाओं के सामने रख रहा हूँ जिससे हमारे तीर्थ भी सुधरेगे एवं आपको यश भी मिलेगा।

पर्यावरण संरक्षण हेतु प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र

पर्यावरण संरक्षण की चर्चा तो कई वर्षो से चल रही है किन्तु 2-3 वर्षो से माइक्रोप्लास्टिक के बढ़ते खतरे से मानवता का हित सोचने वालों की नींद उड़ा दी है। प्लास्टिक को डिकम्पोज होने में 400-500 वर्ष लग जाते है एवं प्लास्टिक के सूक्ष्मकण हमारे मस्तिष्क, तंत्रिका तंत्र, श्वास नली आदि में पहुंच कर अनेक प्रकार की लाइलाज बीमारियों को जन्म दे रहे हैं। कई लोगों का तो यहाँ तक कहना है कि यह परोक्ष रूप से हमारी प्रजनन क्षमता को भी प्रभावित कर रहा है। ऐसे में प्रबंधन में निपुण हमारे युवा तीर्थों को प्रदूषण एवं प्लास्टिक मुक्त बनाने की योजना में रुचि लेंगे।

1. तीर्थं परिसर को प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र घोषित किया जावे एवं पूरे क्षेत्र की एक टीम से शुरूआत में पूरी सफाई कराई जाये। जिससे हर जगह से प्लास्टिक हट सके।
2. क्षेत्र पर शुद्ध आर.ओ. जल की व्यवस्था की जाये। इसके साथ वॉटर कूलर भी लगाया जाये क्योंकि प्लास्टिक की पानी की बोतल प्रदूषण का एक प्रमुख कारण है।
3. पूरे तीर्थ परिसर में प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र के बोर्ड लगाये एवं यात्रियों को भी प्रेरित करे कि प्लास्टिक की थैलियाँ हमारे तीर्थ के डस्टबिन में भी न डाले उन्हें बाहर ले जाये।
4. तीर्थ में डिस्पोजल का उपयोग न करें। इसके बजाय, थाली, गिलास, लोटा, कागज, जूट या कपड़े की थैलियॉ प्रयोग में लाये।
5. क्षेत्र की कैन्टीन में भी प्लास्टिक का उपयोग न्यूनतम कराये। जो चीजे जैसे दूध आदि केवल पाउच में ही मिलता है। उनको छोड़कर शेष में उपयोग न करें।
6. प्लास्टिक में कपों के स्थान पर मिट्टी के कुल्हड़ का उपयोग करें।

महा वीर जयन्ती की पूर्व संध्या पर शहर या ग्राम के बुद्धिजीवी वर्ग के साथ सार्वजनिक सभा करें उसमें महावीर ही नही सम्पूर्ण जैन परम्परा के भारतीय संस्कृति के विकास में प्रदत्त योगदान की चर्चा से अच्छा साहित्य मंगाकर प्रबुद्धजनों को भेंट दे। आज जमाना सबसे मिलकर चलने का है। हमारी संख्या कम है। अतः संघर्ष प्रतिस्पर्धा नहीं समन्वय ही मार्ग है।

महाराष्ट्र की दो विभूतियां का वियोग

पैठण (महाराष्ट्र) के डॉक्टर पन्नालाल पापड़ीवाल एवं नासिक के श्री राजाभाऊ पाटणी महाराष्ट्र के तीर्थ में सदा अग्रणी रहे हैं। डॉक्टर पापड़ीवाल जी ने जीवन के दो दशकों का समर्पण कर मांगी तुंगी में भगवान ऋषभदेव की 108 फीट उत्तम मूर्ति का निर्माण करने में अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया तो श्री राजाभाऊ पाटणी जी ने शिर्डी में भगवान पारसनाथ के विशाल एवं मनोज्ञ मूर्ति को विराजमान कर कर एक संपूर्ण तीर्थ विकसित किया। दोनों महानुभावों का फरवरी 25 के प्रारंभ में विछोह हो जाना समाज की अपूर्ण क्षति है। तीर्थ क्षेत्र कमेटी दिवंगत आत्माओं की शीघ्र मुक्ति एवं शोक संतप्त परिजनों हेतु धैर्य की कामना करती है।

इस पखवाड़े के आयोजन हेतु मेरी अग्रिम शुभकामनाओं सहित

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.) मो.: 94250 53822

आलौकिक व्यक्तित्व थे संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

-डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

अपराजेय साधक, धरती के देवता, महायोगी, युग द्रष्टा,अनासक्त महायोगी, भारतीय संस्कृति के उन्नायक, विलक्षण आध्यात्मिक यात्रा के पथिक, अध्यात्म सरोवर के राजहंस, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के महानद, साधना के सुमेरू, अपनी कल्याणकारी वाणी से जन-जन को प्रभावित करने वाले, एक अरिहंत से संत शिरोमणि महाकवि आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर जी महाराज का प्रथम स्मृति दिवस 6 फरवरी 2025 को देश-विदेश में उत्साह से अगाध श्रद्धांपूर्वक मनाया गया। विशेष रूप से समाधिस्थल डोंगरगढ़ में निर्यापक मुनि श्री समता सागर जी महाराज ससंघ के सान्निध्य में विशेष आयोजन किया गया ,जहाँ देश के गृहमंत्री अमित शाह जी ने भारत सरकार द्वारा जारी आचार्यश्री के 100 रुपये के सिक्के व पांच रुपए का एक कवर लिफाफा का लोकार्पण भी किया। गृहमंत्री अमित शाह जी ने अपने महत्वपूर्ण संबोधन में कहा कि G summit 20 तथा और भी जगह प्रेसिडेंट ऑफ़ इंडिया की जगह प्रेसिडेंट ऑफ़ भारत लिखा गया तो सिर्फ़ आचार्य श्री विद्यासागर जी के कहने पर। निश्चित ही यह हमारे लिए गौरव की बात है। वहीं भोपाल में विधानसभा भवन में मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज एवं मुनि श्री आदित्य सागर जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने आचार्यश्री के स्मारक बनाने की घोषणा की।

पूज्यवर आचार्यश्री न केवल श्रमण संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र थे बल्कि पूरी भारतीय संस्कृति को उन्होंने अपनी साधना के बल पर गौरवान्वित किया। वे पंचमकाल में चतुर्थकाल सम संत थे। महाप्रज्ञ आचार्यश्री की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुख मुद्रा प्रायः सभी का मन मोह लेती थी। आचार्यश्री के कंठ में भी अपने गुरू के समान ही सरस्वती का अनुपम निवास था। आचार्यश्री की पावन वाणी सत्यं, शिवं सुन्दरं की विराट अभिव्यक्ति तथा मुक्ति द्वार खोलने में सर्वथा सक्षम थी। उन्होंने अपनी अनवरत साधना से जीवन की कलात्मकता को भारतीय संस्कृति के अनुरूप अभिव्यक्त किया । परंपरागत धार्मिक व सांस्कृतिक धारणाओं में व्याप्त कुरीतियों एवं विघटन को समझकर वे उन्हें हटा देने को व्याकुल रहे। इसीलिए धर्म की वैज्ञानिक, सहज, सरल व्याख्या आचार्यश्री ने उपलब्ध कराई। आचार्य प्रवर कुन्दकुन्द को किसी ने जिया है तो वह संत आचार्य श्री विद्यासागर जी हैं।

आचार्यश्री का जन्म : आचार्य विद्यासागर जी का जन्म 1946 में शरद पूर्णिमा को कर्नाटक के बेलगांव जिले के सद्लगा ग्राम में हुआ था। उनके पिता मल्लप्पा व मां श्रीमंती ने उनका नाम विद्याधर रखा था। कन्नड़ भाषा में हाईस्कूल तक अध्ययन करने के बाद विद्याधर ने 1967 में आचार्य देशभूषण जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया।

ऐसे बने विद्या के सागर : कठिन साधना का मार्ग पार करते हुए आचार्यश्री ने महज 22 वर्ष की उम्र में 30 जून 1968 को अजमेर में आचार्य ज्ञानसागर महाराज से मुनि दीक्षा ली। गुरुवर ने उन्हें विद्याधर से मुनि विद्यासागर बनाया। 22 नवंबर 1972 को अजमेर में ही आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने आचार्य की उपाधि देकर उन्हें मुनि विद्यासागर से आचार्य विद्यासागर बना दिया। दौर शुरू हुआ तो आचार्य श्री ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

डोंगरगढ़ में हुई समाधि : संत शिरोमणि आचार्य भगवन् विद्यासागर महाराज ने 77 वर्ष की आयु में छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ में श्री दिगंबर जैन तीर्थ चंद्रगिरि में 17 और 18 फरवरी की मध्यरात्रि में 2:30 पर समाधि पूर्वक नश्वरदेह को त्याग दिया है। उनकी साधना अद्वितीय थी ।आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के समाधि पूर्वक देहविलय पर मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ में आधे दिन का राजकीय शोक सरकार की ओर से घोषित किया गया। आचार्यश्री के आचार्य पद का उत्तरदायित्व 16 अप्रैल 2024 को कुण्डलपुर में विधि विधान के साथ लाखों श्रद्धालुओं और शताधिक संतों की उपस्थिति में मुनि श्री समयसागर जी महाराज को प्रदान किया गया।

पीएम मोदी भी हुए थे भावुक : आचार्य विद्यासागर महाराज के समाधिस्थ होने की खबर मिलते ही पीएम नरेंद्र मोदी ने दुख व्यक्त करते हुए इसे अपूरणीय क्षति बताया है। पीएम ने लिखा कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी का ब्रह्मलीन होना देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। लोगों में आध्यात्मिक जागृति के लिए उनके बहुमूल्य प्रयास सदैव स्मरण किए जाएंगे। वे जीवनपर्यंत गरीबी उन्मूलन के साथ-साथ समाज में स्वास्थ्य और शिक्षा को बढ़ावा देने में जुटे रहे। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे निरंतर उनका आशीर्वाद मिलता रहा। माननीय प्रधानमंत्री ने एक आलेख भी आचार्यश्री पर लिखा है जो 21 फरवरी 2024 के प्रमुख सभी दैनिक समाचार पत्रों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रमुखता से प्रकाशित हुआ है। श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए वे भावुक हो गए थे।

जन-जन की आस्था के केंद्र: आचार्यश्री मात्र जैनों के ही नहीं जन-जन की आस्था के केंद्र थे। इनकी प्रेरणा से हजारों गौवंश की रक्षार्थ दयोदय गौशालाएं संचालित हो रही हैं,हिंदी भाषा अभियान,इंडिया हटाओ भारत लाओ

अभियान, हथकरघा स्वावलंबन रोजगार,स्वदेशी शिक्षा,संस्कृत, हिंदी ,अंग्रेजी का बेजोड़ साहित्य,हाइकू आदि उनकी श्रेष्ठतम साधना उन्हें संत शिरोमणि कहलाने के लिए काफी है।

अद्वितीय कार्य : आचार्यश्री की प्रेरणा से 156 गौशालाएं संचालित हैं। दयोदय एक्सप्रेस का नाम आचार्यश्री की प्रेरणा से ही रखा गया। मूकमाटी का 12 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। उन्होंने हिंदी और भारत को भारत कहने के लिए राष्ट्रीय क्षितिज पर जो पहल की वह अद्वितीय है जिसको राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी ने भी अपने उद्बोधन में जिक्र किया और बताया कि राष्ट्रपति भवन में यदि इंडिया शब्द की जगह भारत लिखना शुरू हुआ तो वह आचार्यश्री की प्रेरणा से ही संभव हुआ है। भारत सरकार जो आत्मनिर्भर भारत की बात कर रही है उसके प्रेरणास्रोत भी आचार्यश्री ही हैं। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी आचार्यश्री के दर्शनार्थ पहुँचे थे तब आचार्यश्री ने प्रधानमंत्री से कही थी कि आप आत्मनिर्भर भारत पर जोर दीजिए तभी से सरकार ने इस पर अमल करना शुरू कर दिया था। जब उनसे एक कुलपति ने जबलपुर में पूछा कि हमें शिक्षा में क्या पढ़ाना चाहिए तो उन्होंने एक लाइन में कहा था कि - शिक्षा में भारत को पढ़ाइये।

महापुरुष के विशाल कृतित्व से भारतीय साहित्य हुआ समृद्ध : आज तक के इतिहास में किसी भी संस्कृत के विद्वान ने पांच से ज्यादा शतक संस्कृत भाषा में नहीं लिखे हैं किंतु आचार्यश्री ने अपनी लेखनी से संस्कृत भाषा में छह शतक लिख एक नूतन इतिहास की संरचना की है। आपने ज्ञान, ध्यान, तप के यज्ञ में अपने आपको ऐसा आहूत किया कि अल्पकाल में ही प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, कन्नड भाषा के मर्मज्ञ साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध हो गये। आपने प्राचीन जैनाचार्यों के 25 प्राकृत-संस्कृत ग्रंथों का हिंदी भाषा में पद्यानुवाद कर पाठकों को समरसता प्रदान की है। आपके द्वारा रचित हिन्दी भाषा में लघु कविताओं के चार संग्रह ग्रंथ- नर्मदा का नरम कंकर, तोता क्यों रोता, डूबो मत लगाओ डुबकी, चेतना के गहराव में, ये कृतियां साहित्य जगत् में काव्य सुषमा को विस्तारित कर रही हैं।

कालजयी कृति मूकमाटी : आचार्यश्री की रचना मूकमाटी उत्कृष्ट काव्य कृति है। यह महाकाव्य है। 'विद्वानों का मानना है कि भवानी प्रसाद मिश्र की सपाट बयानी, अज्ञेय का शब्द विन्यास, निराला की छान्दसिक छटा, पंत का प्रकृति व्यवहार, महादेवी की मसृण गीतात्मकता, नागार्जुन का लोक स्पन्दन, केदारनाथ अग्रवाल की बतकही वृत्ति, मुक्तिबोध की फैंटेसी संरचना और धूमिल की तुक संगति आधुनिक काव्य में एक साथ देखनी हो तो वह 'मूकमाटी' में देखी जा सकती है।' इस महाकाव्य पर 4 डी. लिट्, 30 से अधिक पीएचडी, 7 एम. फिल के शोध प्रबंध तथा 2 एम.एड. और 6 एम.ए. के लघु शोध प्रबंध लिखे जा चुके हैं।

50 विश्वविद्यालयों में आचार्यश्री की कालजयी कृति मूकमाटी पाठ्यक्रम में सम्मिलित है। इस महाकाव्य पर निरंतर शोधकार्य और लेखन अनवरत रूप से जारी है। इस कृति ने भारतीय साहित्य भंडार को गौरव प्रदान करते हुए जो समृद्धता प्रदान की है वह अकल्पनीय है। आचार्यश्री के व्यक्तित्व और कृतित्व पर पचास से अधिक पी.एचडी. हो चुकी हैं जो एक कीर्तमान है।

507 चेतनकृतियों के निर्माता : आचार्यश्री के दिव्य तेजोमय आभा मंडल के प्रभाव से उच्च शिक्षित युवा, युवतियां जवानी की दहलीज पर आपके श्री चरणों में सर्वस्व समर्पित कर बैठे।

आचार्यश्री ने 131 मुनि, 172 आर्यिकायें, 60 ऐलक, 141 क्षुल्लक, 3 क्षुल्लिका, कुल मिलाकर 507 दीक्षाएं प्रदान की हैं। आचार्यश्री की इन चेतन कृतियों ने जो त्याग, तपस्या और साधना की छटा बिखेरी है।

इण्डिया नहीं भारत बोलो : परम पूज्य आचार्यश्री का कहना कि भारत को इंडिया नहीं कहना चाहिए, भारत कहना चाहिए। इण्डिया का कोई मतलब नहीं है। यह अर्थहीन नाम है। जबकि भारत नाम एक परंपरा का है, यह एक संस्कृति का नाम है। भारत देश के लिए अंग्रेजी नाम का इस्तेमाल होना दुर्भाग्यपूर्ण है। भारत शब्द में एक ताकत है। इस देश के हर व्यक्ति का दिल इस शक्ति से गूंजना चाहिए। आचार्यश्री का कहना है कि भारत का नाम पहले भी था, अभी भी है और आगे भी रहेगा। भारत को इंडिया कहने वाले इसकी संस्कृति से अनभिज्ञ हैं। हम सभी को अपने देश का नाम भारत के नाम से सम्बोधित करना चाहिए। इंडिया हटाओ, भारत बचाओ। आचार्यश्री के इस अभियान को लोगों ने हाथोहाथ लिया है और लाखों लोग भारत का प्रयोग करने लगे हैं।

भारतीय संस्कृति के उत्थान हेतु आचार्यश्री के प्रमुख संदेश : आचार्यश्री के जो प्रमुख संदेश थे वे कुछ इस प्रकार से हैं - भारत में भारतीय शिक्षा पद्धति लागू हो। छात्र-छात्राओं की शिक्षा पृथक-पृथक हो। चिकित्सा व्यवसाय नहीं सेवा है। नौकरी नहीं व्यवसाय करो। बैंकों के भ्रमजाल से बचो और बचाओ। हथकरघा स्वावलंबी बनने का सोपान। गौशालाएं जीवित कारखाना। अंग्रेजी नहीं भारतीय भाषा में हो व्यवहार। विदेशी गुलामी का प्रतीक इंडिया नहीं, हमें गौरव का प्रतीक भारत नाम देश को चाहिए। चिकित्सा व्यवसाय नहीं सेवा है। स्वरोजगार को संवर्धित करो। मांस निर्यात देश पर कलंक। शत-प्रतिशत मतदान हो। भारतीय प्रतिभाओं का निर्यात रोका जाय।

दिग्गज राजनेता आचार्यश्री के चरणों में : हमारे पूज्य आचार्यश्री ने अपनी त्याग, तपस्या और साधना से पूरे विश्व को बताया कि आज भी सच्चे संतों की कमी नहीं है। आज संतों के सम्मान को बचाने में आचार्यश्री का नाममात्र ही काफी है। यही वजह है के देश की राजनीति के धुरंधर आचार्यश्री के चरणों में आकर अपने आपको धन्य महसूस करते थे। उनका दर्शन पाकर वे अपने जीवन को सार्थक मानते थे। चाहे वह राष्ट्रपति हों या प्रधानमंत्री सभी ने उनके चरणों में जाकर देश की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त किया।

नई शिक्षा नीति में आचार्यश्री का मार्गदर्शन : नई शिक्षा नीति 2020 का निर्धारण करने वाली समिति के अध्यक्ष डॉ. कस्तूरीरंगन ने आपके निकट जाकर शिक्षा नीति निर्धारण हेतु विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया था।

श्रमण संस्कृति का सूर्य ! ऐसे युगदृष्टा शताब्दियों सहस्राब्दियों में कभी- कभार जन्म लेते हैं। परम पूज्य जैन दिगम्बर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के विचार प्रकाश स्तंभ बनकर सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

जिनकी वाणी में णमोकार मंत्र हुआ करते हैं।
जिनकी चर्या में आगम में तंत्र हुआ करते हैं।।
हमें महावीर यदि नहीं मिले, कोई गम नहीं।
हमारे महावीर तो विद्यासागर संत हुआ करते हैं।।

आचार्य सन्मति सागर महाराज
तपस्वी सम्राट समता के धनी थे,अच्छे लगते हैं गुरू जन तब,,
जब वो हमारे बीच से गुजर जाते हैं..! : अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर

- नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल सवाददाता

औरंगाबाद आचार्य प्रसन्न सागरजी महाराज की कुलचाराम से बद्रीनाथ अहिंसा संस्कार पदयात्रा चल रही है आज विहार के दोरान प्रवचन मे कहा कि

अच्छे लगते हैं गुरू जन तब,,... जब वो हमारे बीच से गुजर जाते हैं..!

इसलिए सन्त बनकर नहीं, साधक बनकर रहो।

सन्त एक दिन बिदा हो जाते हैं, लेकिन साधक हमारे दिल में बस जाते हैं । सत्य को साक्षी मानकर जीने के अभ्यासी थे तपस्वी सम्राट।

कड़वे सच को मधुर औषधि बनाकर भक्त जन को दवा देने के अच्छे अभ्यासी थे तपस्वी सम्राट।

नारिकेल के स्वभावतः जीने के अभ्यासी थे तपस्वी सम्राट।

शिशु सा निश्छल जीवन जीने के अभ्यासी थे तपस्वी सम्राट।

मधुर मुस्कान से भक्त जन को अपना बनाकर, अपने में जीने के अभ्यासी थे तपस्वी सम्राट।

अन्तरंग, बहिरंग, परिग्रह से मुक्त होकर जीने के अभ्यासी थे तपस्वी सम्राट।

तपस्वी सम्राट श्रमण साधना के महा सूर्य बनकर जीये, जिसे युग ने तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागरजी महाराज के रूप में पूजा, आराधा और मोक्ष मार्गियों के बन गये तप आदर्श।

मुनि कुन्जर अंकलीकर आचार्य श्री आदि सागरजी महाराज के तृतीय पट्टाचार्य - श्री सन्मति सागरजी महाराज का माघ सुदी सप्तमी, संवत् 1995 तदनुसार सन् 1939 में एटा जिले के फफोतू ग्राम में जन्म हुआ। माँ जयमाला देवी, पिता प्यारेलाल जी थे। आपके तीन भाई, पांच बहिनों के बीच, बड़े लाड-प्यार से बचपन बीता। बचपन का नाम ओम प्रकाश था। आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी से 18 वर्ष की उम्र में ब्रह्मचर्य व्रत लेकर आजीवन नमक का त्याग कर दिया। आचार्य श्री विमल सागरजी महाराज से छुल्लक दीक्षा ली

और नाम मिला क्षुल्लक नेमी सागर महाराज। 24 वर्ष की अल्पवय में मुनि दीक्षा हुई और कार्तिक शुक्ल द्वादशी संवत् 2019, सन् 1962 में तीर्थराज सम्मेद शिखर में मुनि सन्मति सागर महाराज बन गये। आचार्य महावीर कीर्ति गुरूदेव ने माघ वदी तृतीया वि. सं 2029, 03 जनवरी 1972, मेहसाणा में अपनी समाधि से तीन दिन पूर्व अपना आचार्य पद सन्मति सागर को देकर बना दिया आचार्य सन्मति सागर महाराज।

तपस्वी सम्राट समता के धनी थे, जीव मात्र के प्रति करूणा से ओतप्रोत रहते थे, छोटे-बड़े, गरीब-अमीर के भेदभाव से मुक्त थे, शास्त्रों की परायणता ने आप में कूट-कूट कर विद्वता भर दी थी। आप सिद्धान्त, न्याय, व्याकरण, काव्य, छन्द, अलंकार, ज्योतिष, वास्तु, आयुर्वेद, मन्त्र-शास्त्र, आदि अनेक विद्याओं के उद्भट विद्वान थे, परन्तु रन्च मात्र भी ज्ञान का अहंकार आपको स्पर्श नहीं कर पाया।

तपस्वी सम्राट निष्काम योगी थे, सर्वोत्कृष्ट आत्म आनंद के सागर में अवगाहन कर, सरस्वती की साधना में लीन होकर, संस्कृति की सुरक्षा के प्रेरणास्रोत रहे। आपने प्रचण्ड पुरूषार्थ के प्रवर्तन से, आत्म सिद्धि के स्वर्णिम राज पथ पर करते रहे सदैव आरोहण और समस्त विभ्रमों को, निंद्रा को हरा कर, शरीर की प्राकृतिक क्रियाओं पर नियंत्रण करते हुये, स्वानुशासन के सतत् अभ्यासी आचार्य प्रवर, सामायिक, प्रतिक्रमण और स्वाध्याय से कभी भी समझौता नहीं करते थे।

तपस्वी सम्राट ने जिन दीक्षा के बाद, 250 से ज्यादा साधु साध्वियों को मोक्ष मार्ग पर प्रवृत्त किया। आपने अपना आचार्य पद मुनि सुनील सागरजी को देकर आर्ष परम्परा को जीवन्त कर दिया।

आपकी 87 वीं जन्म जयन्ती पर अनन्त शुभसंशाओ सहित अनन्त प्रणाम निवेदित करते है।

संसार परिभ्रमण से बचने का उपाय

- डॉ नरेंद्र जैन भारती - सनावद

संसार में यह जीव कहीं से आता है और कहीं भी चला जाता है,जिसे जन्म और मृत्यु कहते हैं। प्रत्येक प्राणी की आत्मा ऐसा करती है, इसीलिए कहा जाता है कि -

जन्में मरै अकेला चेतन, सुख - दुःख का भोगी
और किसी का क्या इक दिन यह देह जुदी होगी।

अर्थात् यह आत्मा ही अकेली जन्म-मृत्यु के भंवर में फंसी हुई है। वही सुख और दुख को भोगती है। शरीर भी उसका साथ नहीं देता, वह भी एक दिन आत्मा से अलग हो जाता है। यह व्यवस्था अनादि काल से चली आ रही है। आत्मा स्वयं संसार में नहीं घूमती वरन राग - द्वेष के कारण यह प्राणी जैसा कर्म बंध करता है, वैसी ही आत्मा विभिन्न पर्यायों में घूमती रहती है। जन्म धारण करती है, मरती है, पुनः जन्म लेती है, मरती है परंतु उसकी चेतनता किसी भी देह के साथ नष्ट नहीं होती। कर्मों के फल के अनुसार देह का परिवर्तन होता है। आचार्य योगीन्दुदेव कहते हैं- जीव अकेला ही पैदा होता है, अकेला ही मरता है और अकेला ही सुख-दुख का उपभोग करता है। वह नरक भी अकेला ही जाता है और मोक्ष को भी अकेले ही प्राप्त करता है।इसीलिए हे जीव! तू यदि अकेला ही है तो पर भाव का त्याग कर और आत्मा का ध्यान कर, जिससे तू शीघ्र ही ज्ञानमय मोक्ष सुख को प्राप्त कर सके। इसलिए कहा गया है -

आत्मज्ञान ही ज्ञान है, शेष सभी अज्ञान
विश्व शांति का मूल है, वीतराग विज्ञान

भगवान वीतराग देव ने अपनी वाणी के माध्यम से जो आत्मा का ज्ञान हमें दिया है, वही ज्ञान है ; शेष सभी मिथ्या ज्ञान है। मिथ्यात्व के कारण ही जीव अतत्व श्रद्धानी होता है तथा सम्यकत्व हीन होता है। सच्चे देव,शास्त्र और गुरुओं पर श्रद्धा न रखने के कारण धर्म से विमुख रहता है तथा संसार में परिभ्रमण करता है।

मनुष्य में ज्ञान और बुद्धि दोनों है इसीलिए वह विवेक का उपयोग कर पर भावों को समझ कर उनका त्याग करता है। क्रोध,मान, माया और लोभ रूपी कषायें आत्मा का घात करती है।इसलिए पर भाव हैं जिन्हें हम आत्मानुशासित होकर नियंत्रण में रख सकते हैं। आत्म नियंत्रित रहने के लिए अनुशासन जरूरी है। स्व आज्ञा ही ऐसा कर सकती है कि क्रोधादि नियंत्रित रह सके। हमारी सकारात्मक सोच हमें वैसा बनाती है। जैसे जब हमारी इच्छा या मन यह कहे कि आपको ऐसा करना है तभी मैं ऐसा सोचूं और अनुकरण करूं कि जो आप (मन) कह रहा हैं, उसे मैं नहीं मानूंगा लेकिन मैं जो कह रहा हूं उसे आपको मानना होगा। ऐसा करने से हम आत्मस्थ हो सकते हैं। संसारी प्राणी की यथार्थ दिशा में सोच ऐसा करा सकती है। ज्ञान के माध्यम से हम ऐसा कर सकते हैं। वीतराग देव ने हमें ऐसा ही ज्ञान दिया है जिससे मन की

प्रवृत्ति विषय भोगों से बचती है तथा संसार का मायाजाल नष्ट होता है। कहा जाता है - "वीतरागी भवेत् योगी " अर्थात् जो वीतरागी है वही योगी बनता है। यदि कोई वीतरागी है तो वह संसार के माया जाल में हर्ष या विषाद नहीं करता, वह सबसे पृथक होकर अपने आपको देखता है और जानता है कि असंयम ही मन को चंचल बनाता है। जिसने मन की चंचलता को समाप्त कर दिया वही वीतरागी होता है। ऐसे वीतराग देव के मुख से निकली वाणी संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय से रहित स्वपर हितकारी होती है क्योंकि भगवान जिनेंद्र की वाणी का अनुकरण करने वाला जन्म - मृत्यु पर विजय प्राप्त कर भवसागर से मुक्त हो जाता है। मुक्ति के द्वारा उसके लिए खुल जाते हैं क्योंकि वह आत्मा के हित के लिए ही कार्य करता है और वीतराग देव के बताएं मार्ग पर ही चलता है।सच्चा जिनभक्त यह कामना करता है -

दिन दिन पाऊं जिनवर भक्ति, जिनवर भक्ति, जिनवर भक्ति।
सदा मिले वह सदा मिले जब तक न मिले मुझको मुक्ति।।

जिसका अर्थ है कि जब तक मुझे मुक्ति न मिले तब तक भगवान जिनेंद्र देव की भक्ति का सुयोग मुझे हमेशा मिलता रहे क्योंकि वह तीन लोग के जीवों का हित करने वाले हैं। कर्मों का नाश कर संसार सागर से पार उतारने वाले तथा जगत उद्धारक हैं। जन्म मृत्यु से छुटकारा दिलाने में समर्थ है लेकिन यह पुरुषार्थ व्यक्ति को स्वयं करना होगा। धर्म हमें इसी बात की शिक्षा देता है।

घोषणा पत्र

प्रकाशन अवधि	: मासिक
प्रकाशक/मुद्रक/संपादक	: उमानाथ रामअजोर दुबे
राष्ट्रीयता	: भारतीय
मालिक	: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई - 400 004

द्वारा त्रिमूर्ति प्रिंटर्स, 5 वी.पी.रोड, सी.पी.टैंक, मुंबई - 400 004 से मुद्रित कर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई- 400 004 से प्रकाशित.

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य है.

- उमानाथ रामअजोर दुबे, संपादक

जैन तीर्थों के जीर्णोद्धार में हमारी भूमिका

डॉ.रूचि जैन, दिल्ली

जैन शास्त्रों में कहा गया है कि जिसका आश्रय लेकर भव्य जीव संसार से तिरकर मुक्ति को प्राप्त होते हैं उसको तीर्थ कहते हैं। यह भी कहा है कि निश्चय तीर्थ की प्राप्ति का जो कारण है ऐसे जगत् प्रसिद्ध तथा मुक्तजीवों के चरणकमलों से स्पृष्ट ऊर्जयंत, शत्रुंजय, लाटदेश, पावागिरि आदि तीर्थ हैं। वे तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों के स्थान हैं। ये जितने भी तीर्थ इस पृथिवी पर हैं वे सब कर्मक्षय के कारण होने से वंदनीय हैं।

प्रायः जब तीर्थ की चर्चा करते हैं तो हमारा ध्यान भी मात्र सम्मेदशिखर आदि तीर्थ स्थानों पर ही जाता है किन्तु जैन परंपरा में श्रुत,आगम आदि भी उसी तरह तीर्थ स्वीकार किये गए हैं । इतना ही नहीं बल्कि आचार्य कुंदकुंद यहाँ तक कहते हैं कि

जं णिम्मलं सुधम्मं सम्मत्तं संजमं णाणं।
तं तित्थजिणमग्गे हवेइ जदि संतिभावेण।।

अर्थात् जिनमार्ग में उत्तम क्षमादि धर्म,सम्यक्त्व,संयम और यथार्थ ज्ञान - ये तीर्थ हैं। ये भी जब शांत भाव सहित हों तब निर्मल तीर्थ है।

अतः स्पष्ट है कि जहाँ हमें एक तरफ अयोध्या, सम्मेदशिखर आदि प्राचीन शाश्वत तीर्थों की रक्षा किसी भी कीमत पर करना चाहिए वहीं दूसरी तरफ तीर्थंकर भगवान् महावीर की वाणी, तत्त्वज्ञान, जैनधर्म-दर्शन, प्राकृत भाषा और उसमें निबद्ध आगम आदि का भी संरक्षण और संवर्धन उतनी ही निष्ठा,समर्पण और जिम्मेदारी पूरक अनिवार्य रूप से अवश्य करना चाहिए । हम परंपरागत तरीकों के साथ-साथ निम्नलिखित उपाय अपना कर अपने तीर्थों का संरक्षण कर सकते हैं-

- **श्रुततीर्थ का संरक्षण और निर्माण**

हमें जिनेन्द्र भगवान् द्वारा बतलाये गए तत्त्वज्ञान के संरक्षण हेतु श्रुतसंरक्षण का आन्दोलन भी चलाना चाहिए। प्राचीन ग्रंथों की पांडुलिपियों का संरक्षण, उनका संपादन, अनुवाद आदि कार्य बड़े स्तर पर करना चाहिए।

आम समाज में तत्वज्ञान पहुँचाने के लिए पाठशाला, शिविर आदि का आयोजन हो, इसके लिए विद्वानों का निर्माण और उसके लिए अधिक से अधिक विद्यालयों का निर्माण आदि कार्य श्रुततीर्थ के संरक्षण के लिए करने चाहिए ।

- **तीर्थों के प्रामाणिक दस्तावेजों का संरक्षण –**

तीर्थों पर होने वाले अनधिकृत कब्जों से उन्हें बचाने के लिए पहले से ही कानूनी रूप से भी उसे मजबूत बनाना चाहिए । इसके लिए हमें प्रत्येक

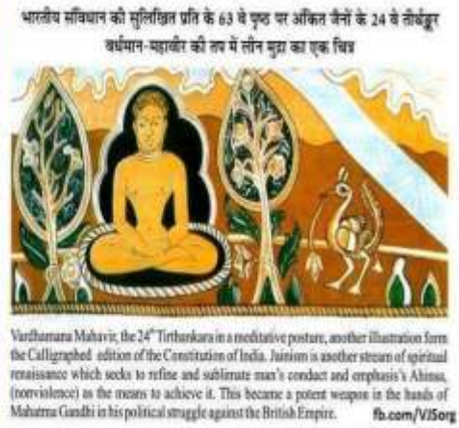

जैन तीर्थ से संबंधित इतिहास, पुरातात्विक प्रमाण, शोधपत्र, सभी चित्र, कोर्ट की कार्यवाही तैयार करके उसे एक प्रामाणिक और स्तरीय पुस्तक कई भाषाओँ में प्रकाशित करके, देश-विदेश के सभी अभिलेखागारों, सरकारी पुरातत्त्व संग्रहालयों, विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण स्थानों में भिजवा देना चाहिए । ये भविष्य में सत्य के खोजियों के लिए सहायक बनेगा। मंदिर वर्षों पुराना हो या नया, मंदिरों की जमीनों की खातेदारी

कठिन हो गया है अतः जहाँ हमारे तीर्थ हैं और जैन समाज नगण्य है वहाँ कुछ अन्य स्थानों के जैन परिवारों को रोजगार देकर बसाया जाय ताकि एक दिन वहाँ हमारी समाज बन सके और तीर्थ के प्रति समर्पित जैन वहाँ रहें। वे भविष्य में तीर्थों के स्थानीय संरक्षक बनेंगे।

- **साथ देकर सहयोग लेने की नीति**

मुगलकाल में भी जैन तीर्थ और धर्म का संरक्षण हमारे पूर्वजों ने साथ देकर

में नाम जरूर करवाना चाहिए एवं उसके नाम के अनुसार(जिसमें जैन शब्द जरूर हो) ट्रस्ट डीड एवं पैन कार्ड बनवाकर उसका सरकार के देवस्थान विभाग में पंजीकरण जरूर करवाना चाहिए। जिन तीर्थों पर कब्जे हो गए हैं किन्तु इतिहास और कोर्ट हमारे पक्ष में है, तो इससे संबंधित प्रमाण संस्कृत में ताम्रपत्र में उल्लिखित करवा कर उन्हें अपने कब्जे वाले स्थान में जमीन में गढ़वा देना चाहिए। ये भविष्य में प्रमाण के रूप में काम आएगा जब हमारा प्रभुत्व होगा।

- **तीर्थस्थानों पर जैन समाज का विस्तार**

प्रायः देखा जा रहा है कि हमारे कई प्राचीन तीर्थों के आस-पास जैन समाज ही समाप्त हो गई है, इस कारण उनका संरक्षण और अधिक

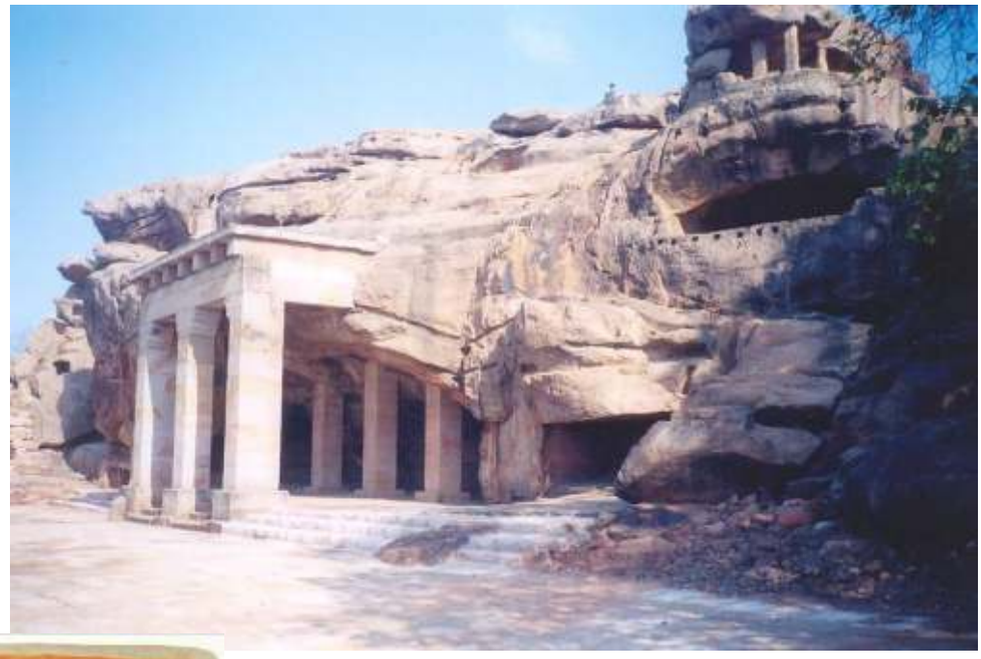

सहयोग लेने की नीति के तहत ही किया था क्यों कि संख्या कम होने से आर पार की लड़ाई आप कभी लड़ नहीं सकते,सिर्फ मैनेज कर सकते हैं। सत्ता को प्रभावित करके उससे सहयोग लेने की नीति ही एक मात्र मार्ग है जिससे चल अचल तीर्थों का संरक्षण किया जा सकता है। विषापहार स्तोत्र का वाक्य है - मूलस्य नाशो बलवद्विरोधः। बलवान से विरोध मूल से नाश का कारण बन जाता है।

अतः युक्ति और विवेक पूर्वक, बिना बड़ी लड़ाई के और बिना आत्मसमर्पण के, संतुलन और निष्ठा पूर्वक वर्तमान की परिस्थितियों में तीर्थ संरक्षण की चतुराई हमें सीखनी ही पड़ेगी।

यदि अब भी न समझे तो मिट जायेंगे खुद ही,
दास्तां तक भी न होगी हमारी दास्तानों में

राजकीय संग्रहालय गंधर्वपुरी में कायोत्सर्गस्थ एकल तीर्थंकर प्रतिमाएँ

डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इंदौर

राजकीय संग्रहालय में गंधर्वपुरी में तीर्थंकरों की एकल प्राचीन प्रतिमाएँ बहुसंख्य हैं। इनमें से सत्तरह पद्मासन प्रतिमाओं का परिचय "एकल पद्मासन तीर्थंकर प्रतिमाएँ" शीर्षक से दिया है। यहाँ नौ कायोत्सर्गस्थ प्रतिमाओं का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत है। ये सभी प्रतिमाएँ गंधर्वपुरी राजकीय संग्रहालय के खुले वाड़े में रखीं हैं।

1. कायोत्सर्गस्थ एकल तीर्थंकर प्रतिमा- यह प्रतिमा बलुआ पाषाण की समपादासन में कायोत्सर्गस्थ है, खण्डित होने पर भी मनोरम है। पादपीठ में कोई लांछन है, किन्तु सीमेन्ट के आधार पर स्थिरीकृत होने से छुप गया है। अनेक वर्षों से धूप, शर्दी, गर्मी, वर्षात् में खुले में रखी रहने से ललाट और वक्ष के पाषाण की पपड़ी उधड़ रही है। जिससे श्रीवत्स भी नष्ट हो गया है। इसका दक्षिण कर कोहनी के नीचे भग्न है। उष्णीष युक्त कुंचित केश हैं। कमल-पंखुड़ियों युक्त सुन्दर प्रभावल उत्कीर्णित है। चरणचौकी पर समानान्तर में दोनों ओर चामरधारी देव शिल्पित हैं। धामरधारियों के आभूषण विशिष्ट हैं, इन्हें बनमाला धारण किये हुए भी दर्शाया गया है। इनके बाह्य पार्श्व के स्थान में मूलनायक के बायें ओर तीर्थंकर की यक्षी शासनदेवी और दक्षिण पार्श्व में शासन देव यक्ष शिल्पित है। मूल प्रतिमा के कर-मूल से स्कंधों तक के परिकर में कोई शिल्पांकन नहीं है। मस्तक के दोनों ओर सपत्नीक पुष्पवर्षक माल्यधारी गगनचर देव हैं। वे कुछ खण्डित हैं। इनसे ऊपर का वितान भाग छत्र- मृदंगवादक आदि भग्न और अप्राप्त हैं।

तीर्थंकर कायोत्सर्गस्थ एकल प्रतिमा १, गंधर्वपुरी, देवास म.प्र.

2. कायोत्सर्गस्थ एकल तीर्थंकर प्रतिमा- बलुआ पाषाण की ही यह प्रतिमा अधिक क्षरित हो गई है। फिर भी वक्ष पर श्रीवत्स देखा जा सकता है। भुजाओं से नीचे के हस्त भग्न हैं। कुंचित केश और उष्णीष स्पष्ट है। प्रभावल त्रिस्तरीय बृहत् व कलायुक्त है। चँवर ढोराने वाले चमरी देव बहुत खण्डित हैं, तथापि उनके आकर अवशिष्ट हैं। त्रिछत्र स्पष्ट है, उसके ऊपर दुंदुभिवादक की पूर्ण आकृति है, किन्तु अत्यंत क्षरित है। प्रथम दृष्ट्या प्रतीत होता है कि यह एक लघु पद्मासन तीर्थंकर प्रतिमा है, किन्तु मृदंग भले ही खण्डित है किन्तु हाथ थाप देने के लिए उतने ही दूरी पर हैं, पद्मासन नहीं बन सकती है। एक और पहचान शेष है। इसकी भुजाओं में भुजबंध पहने दर्शाया गया है। मृदंगवादक के दोनों ओर अशोक वृक्ष की शाखाओं से लंबे-लंबे पत्रगुच्छक लटकते हुए दर्शाये गये हैं।

तीर्थंकर कायोत्सर्गस्थ एकल प्रतिमा २, गंधर्वपुरी, देवास म.प्र.

3. कायोत्सर्गस्थ एकल तीर्थंकर प्रतिमा- इय क्षरित व भग्न कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा की उदरावली, किंचित् श्रीवत्स, उष्णीष युक्त घुंघराले केश हैं। कर्ण स्कंधों को स्पर्शित हैं। पादयुगलों के समानान्तर दोनों पार्श्वों में चामरधारी शिल्पित हैं। दाहिनी ओर एक अपेचाकृत बड़ी स्त्री आकृति उत्कीर्णित है। शेष परिकर भग्न और अनुपलब्ध है।

4. कायोत्सर्गस्थ एकल तीर्थंकर प्रतिमा- बलुआ पाषाण फलक पर शिल्पित इस प्रतिमा का घुटनों से नीचे का भाग और टेंहुनी से नीचे का बाम हस्त खण्डित है। चामरधारी खण्डित होकर नष्ट हो गये हैं। स्कंधों को स्पर्श करते कर्ण, उष्णीषयुक्त कुंचित केश बृहत् कलात्मक भामण्डल है। झूलता हुआ सुन्दर छत्रत्रय, तदोपरि अर्धमृदंगवादक

तीर्थंकर कायोत्सर्गस्थ एकल प्रतिमा ३, गंधर्वपुरी, देवास म.प्र.

तीर्थंकर कायोत्सर्गस्थ एकल प्रतिमा ४, गंधर्वपुरी, देवास म.प्र.

तीर्थंकर कायोत्सर्गस्थ एकल प्रतिमा ५, गंधर्वपुरी, देवास म.प्र.

है, उसके दोनों ओर एक-एक आकृति है, जिनकी पहचान नष्ट हो गई है। माल्यधारी देव भी खण्डित व नष्ट हैं। इस प्रतिमा में एक विशिष्टता है कि तीर्थंकर के वाम भाग में एक द्विभंगासन में स्त्री छबि उत्कीर्णित है, यह आभरणों से भूषित है, अन्य पात्रों से बड़ी और तीर्थंकर से छोटी है।

5. कायोत्सर्गस्थ एकल तीर्थंकर प्रतिमा- यह प्रतिमा भी घुटनों से नीचे खण्डित और अप्राप्त है। चामरधारी रहे हैं, वाम भाग के चमरी का शिर दृष्ट है। प्रतिमा का श्रीवत्स अंशतः अवशिष्ट है। कर्ण स्कंधों को स्पर्श कर रहे हैं। सुंदर प्रभावल है, एक-एक माल्यधारियों की दोनों ओर उपस्थिति दर्शाई गई है। बड़ा सा छत्रत्रय और उसके ऊपर दुंदुभिवादक है। छत्रत्रय के दोनो ओर से अशोकवृक्ष के पत्रगुच्छ अवलंबित हैं।

6. कायोत्सर्गस्थ एकल तीर्थंकर प्रतिमा- कायोत्सर्गस्थ सपरिकर यह प्रतिमा कई विशेषताओं युक्त है। यदि यह खण्डित न होती तब प्रतिमा विज्ञान का यह एक अनुठा उदाहरण होता, किन्तु इसका परिकर कहीं पूर्ण तो कहीं अंशतः खण्डित है। दोनों हाथ भग्न हें, वाम कर कलाई से नीचे का भग्न है तो दक्षिण भुजा से खण्डित है। वक्ष पर श्रीवत्स उपस्थित है, मुखमण्डल भग्न है, तथापि उष्णीष का अस्तित्व दृष्टिगत है, प्राभावल सुन्दर पंखुड़ियों युक्त है। तीर्थंकर प्रतिमा के चरणों के पार्श्वों में जो चँवरधारी देव शिल्पित होते हैं, यहाँ की आकृतियाँ पूरी तरह

तीर्थंकर कायोत्सर्गस्थ एकल प्रतिमा ६, गंधर्वपुरी, देवास म.प्र.

भग्न हैं, मात्र स्थान और भग्न की गई छबियों के किंचित् अवशेष हैं। तीर्थंकर के वाम पार्श्व में अपेक्षाकृत एक बड़ी राजसी मुद्रा चामरधारी की भूमिका में है, क्योंकि यह दाहिने हाथ से चँवर ढुराते हुए शिल्पित है। तीर्थंकर के दक्षिण पार्श्व में एक देवी उत्कीर्णित है, इसके वाम हस्त की हथेली में चक्र दर्शाया गया है।

प्रतिमा के प्रभावल के दोनों ओर माल्यधारी पुष्पवर्षक देव हैं। दाहिनी ओर का एक ही माल्यधारी है, किन्तु बायीं ओर के पुष्पवर्ष के बाह्य में एक बड़ी देवी है, जो गगनचर की ही देवी प्रतीत होती है। वितान का शेष भाग भग्न है। दाहिने पुष्पवर्षक के बाह्य में कुछ पीछे को बड़ा सा बहिर्मुख शार्दूल शिल्पित है।

विश्लेषण- 1. इसमें चामरधारियों के स्थान भग्न होने और एक ही आकृति के हाथ में चमर लिये हुए है, ऐसा उदाहरण हमने अन्यत्र नहीं देखा है। **2.** चरणों के पार्श्वों में जो भग्न स्थान हैं उनमें द्विभंगासन में तीर्थंकर के यक्ष-यक्षी शिल्पित रहे हों। लेकिन चामरधारी देव एक रखने की परम्परा नहीं हैं। **3.** चामरधारी तीर्थंकर के गृहस्थ अवस्था का भाई राजा या राजकुमार हो सकता है क्योंकि इसके राजसी आभूषण भी हैं। **4.** तीर्थंकर के दाहिनी ओर जो स्त्री आकृति है उसके बायें हाथ की हथेली में चक्र दर्शाया गया है और दक्षिण कर नीचे की ओर लम्बित है, उस में कोई अस्त्र या स्वयं का दुकूल पकड़े हुए प्रतीत होता है। **5.** देवी प्रायः तीर्थंकर के बायें ओर शिल्पित किये जाने का नियम है। इस स्त्री पात्र की उपस्थिति यह कौन है इसका निर्धारण परिकर भग्न होने के कारण सम्भव नहीं है, केवल अनुमान ही किया जा सकता है। **6.** केवल एक तरफ शार्दूल के शिल्पन से प्रतीत हो ता है कि यह सपरिकर तीर्थंकर प्रतिमा स्वतंत्र नहीं है, अपितु अन्य प्रतिमाओं के संयुक्त शिल्पांकन का एक भाग है।

तीर्थंकर कायोत्सर्गस्थ एकल प्रतिमा ७, गंधर्वपुरी, देवास म.प्र.

7. कायोत्सर्गस्थ एकल तीर्थंकर प्रतिमा- यह प्रतिमा कटि से नीचे पूर्ण भग्न व अप्राप्त है। यह स्तंभयुक्त देवकुलिका में स्थापित है। देवकुलिक शिखरयुक्त है। कटि से नीचे खण्डित होने पर भी इसे कायोत्सर्गस्थ प्रतिमाओं में इस कारण परिगणित किया गया है, क्योंकि सदि यह प्रतिमा पद्मासनस्थ होती तब पार्श्व के दोनों स्तंभ और दूर-दूर होते। तीर्थंकर का उष्णीष, ग्रीवा-त्रिवली, उष्णीष और कुंचित केश हैं। प्रतिमा के बाईं ओर के शार्दूल का कुछ भाग अवशिष्ट है।

8. कायोत्सर्गस्थ एकल तीर्थंकर प्रतिमा- बलुआ पाषाण में ही निर्मित इस प्रतिमा का जंघ से नीचे का पूर्ण भाग हाथों सहित खण्डित और अप्रप्त है। अवशिष्ट प्रतिमा के दोनों पार्श्वों में स्तंभ हैं, इससे ज्ञत होताा है यह स्तंभयुक्त देवकुलिका में स्थापित रही होगी। इसके वक्ष पर श्रीवत्स लांछन स्पष्ट है। ग्रीवा-त्रिवली, कुंचित केश, उष्णीष और कलायुक्त प्रभाव दृष्ट है। शेष वितान भाग खण्डितत और अप्राप्त होने से परिकर का शिल्पांकन अज्ञात है।

9. कायोत्सर्गस्थ एकल तीर्थंकर प्रतिमा- सामान्य पादपीठ पर समपादासन में कायोत्सर्ग जिन स्थापित शिल्पित हैं। इनका उदर-त्रिवली और वक्षस्थ श्रीवत्स लांछन स्पष्ट है। शेष स्कंधों से ऊपर के शिल्पांकन का शिलाफलक खण्डित व अप्राप्त है। तीर्थंकर की चरण चौकी से कुछ नीचे अलग आसन टंकित कर दोनों पार्श्वों में चामरवाहक देवों को चमर डुराते हुए शिल्पित किया गया है। दोनों चँवरी आभूषणों से भूषित हैं, , किन्तु इनके आभूषण अलग हटकर कुछ ग्रामीण परिवेश से प्रभावित जान पड़ते हैं।

एकल तीर्थंकर कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा ८, गंधर्वपुरी, देवास म.प्र.

एकल तीर्थंकर कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा ९, गंधर्वपुरी, देवास म.प्र.

इस तरह उक्त नौ कायोत्सर्गस्थ प्रतिमाओं में कुछ में कई विशेषताएँ हैं, जो अन्य सामान्य प्राचीन प्रतिमाओं में दृष्टिगत नहीं होती हैं। ये सभी प्रतिमाओं का समय 9वीं से 1 2 वीं शती ईस्वी अनुमानित किया गया है। सभी प्रतिमाएं महत्त्वपूर्ण है।

श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र कमठाण,

ता. जि. बीदर-५८५ २२६. कर्नाटक

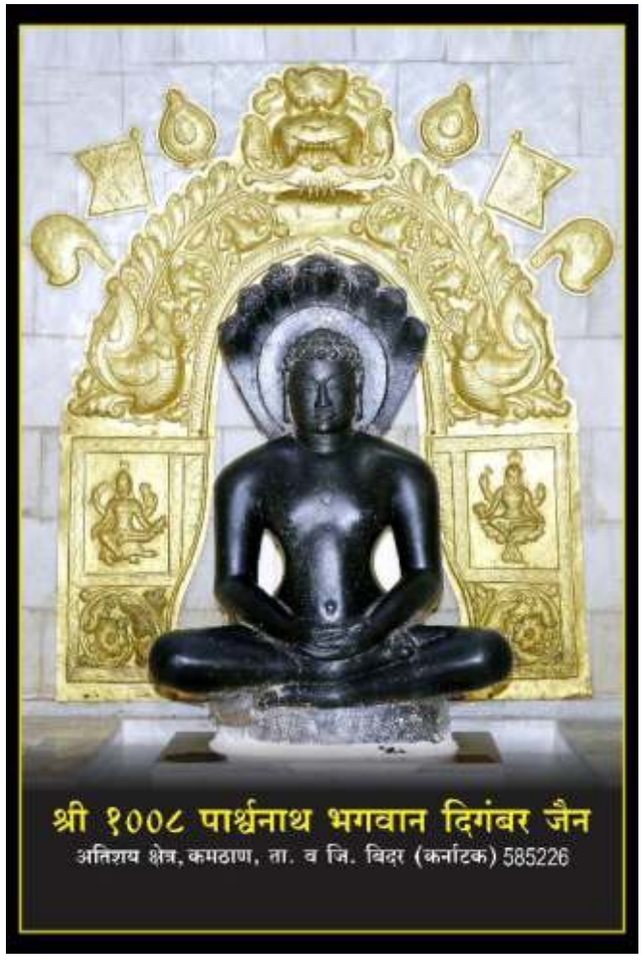

बीदर नगर से केवल ११ कि. मी. के अंतर पर दोहरी खंदक से घिरा हुआ एक ग्राम है जिसे कमठाण ग्राम कहते हैं। बीदर तालुके का यह पंद्रह हजार जनसंख्या वाला बडा ग्राम कहलाता हैं। यहाँ पर जैनों के तेवीसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ जी का सुंदर मंदिर रहकर इसे अतिशय क्षेत्र कहते हैं। यह गांव बीदर नगर से केवल ११ कि. मी. के अंतर पर बसा हुआ है। बीदर जिल्हा केद्र स्थान से कमठाण जानेके लिए हर १५ मिनट के अंतर पर बस, जीप, आटो, मेक्सीकेब आदि की भरपूर सुविधा है। यह कमठाण ग्राम बीदर से केवल १५ से २० मिनट का रास्ता है। बीदर मजल्लाखखेली राज्य महामार्ग पर रह कर यह महामार्ग राष्ट्रीय महामार्ग ९ को जा मिलता है। बीदर से राष्ट्रीय महामार्ग को जाकर जुड़ने वाले इस स्थान को मज्ञाएखेली कहते है। यह राष्ट्रीय महामार्ग ९ पर रहकर यह महामार्ग मुंबई - विजयवाडा, महामार्ग है। कमठाण ग्राम आने पर वहाँ से पूरी मंदिर तक डांबरीकरण किया हुआ अच्छा साफ सुथरा मार्ग आप को मंदिर तक ले जाता है। यह मंदिर ग्यारहवी शताब्दी के शैली की मंदिरों के रूप में बांधा गया है। इतने सालों बाद भी मंदिर अभी सी ढो सी वर्षोतक चलेगा ऐसी अवस्था में है। पूरे मंदिर को नवीकरण करके देखने लायक बनाया गया है। गर्भगृह में और शिखर में तथा गर्भगृह के निचली गुफा में कांच का काम सौ. शकुंतलाबाईजी ने करवाया हैं।

यहाँ के मूलनायक श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान जी की काले पाषाण की ४.५ उंची पाद्मासन की मूर्ति देखने लायक रहकर मनोज्ञ एवं सुंदर रहकर देखनेवाले कुल दर्शनार्थी मंत्र मुग्ध हो जाते है। सदीयों से यह मूर्ति मुख्य गर्भगृह के नीचे बनाए गए गुफा में थी। प.पू. आचार्यश्री श्रुतसागरमुनिमहाराज जी जब १९८४ में यहाँ चातुर्मास निमित्त आये हुये थे तब उन्होने देखा कि इस मूर्ति का सभी को दर्शनलाभ नही मिल रहा है अतः इस मूर्ति को जनाग्रह पर गुफा के ऊपरी भाग पर एक संगमरमरी के सुंदर वेदी बनाकर नया गर्भ गृह का निर्माण कराया, तथा इस नवीनतम गर्भगृह मे अच्छी सुंदर कांच की कारीगरी श्रीमती शकुतलाबाई रोकडेजी ने करवाया और ११८९ के माघ शुद्ध ५ के दिन इस मूर्ति को गुफा के उपरी भाग में बनाया गया नवीनवेदी पर विधिवत रूपसे प्रतीष्ठपित किया गया। तबसे इस क्षेत्र की महिमा और भी बढ गयी है। मूर्ति महीमान्वीत रहकर, हर दर्शनार्थी की मनोकामना पूर्ण होती है, तभी से इस मूर्ति को मनोकामना पूर्ण करनेवाले पार्श्वनाथजी कहते है। मूर्ति बारहवी शताब्दी की रह कर भगवान जी के निचले भाग के पीठ पर पुराने कन्नड भाषा में लिखा हुआ है कि, यह मूर्ति बारहवी शताब्दी में "रैचिशेट्टी नामक व्यक्ति ने खुदवाया" ऐसा लिखा हुआ है। इस पर यह कहा जाता है कि यह मूर्ति बारहवी शताब्दी की है।

तभी से याने ११८९ से इस क्षेत्र को आनेजाने वाले लोगों की संख्या भी बढ गई है। अभी भी सभी जीर्णोद्धार के काम प.पू. आचार्य श्री श्रुतसागर मुनिमहाराज जी के पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से ही हो रहे है।

इस क्षेत्र को प. पू. १०५ क्षुल्लक रत्न श्री अजीत सागरजी, श्री १०५ श्रमणनंदी, क्षुल्लीका विनम्रमती माताजी, १०८ आचार्यश्री सौभाग्य सागरजी मुनिमहाराज, प. पू. अंतरमना मुनिश्री प्रसन्न सागर जी मुनिमहाराज, आर्यनंदी मुनीमहाराज, प. पू. कल्याण सागरजी मुनि महाराज, प. पू. जयभद्र मुनिमहाराज आदि ने यहीँ वास्तव्य किये है। ऐसे पावन धरा पर आप भी जरूर आइए। मंदिर के सामने ३५ फीट उंची उत्तुंग लालपत्थर का मानस्थंभ देखने लायक है। यह मानस्थंभ सौ. शकुंतलाबाई रोकडे और श्रीमती केशरबाई शांतीनाथ वनकुदरे मु. बीदर के निवसीयों ने निर्माण कराकर क्षेत्रार्पण किया हैं। मंदिर के पीछे भाग में पकवान गृह, भोजन शाला रहकर इसे दस लाख रुपये की लागत से नवीन रूपसे बनाने की योजना कमेटी के सामने रह कर बजट की भी व्यवस्था की गई है।

इस क्षेत्र में त्यागी लोगों के लीये भी एक सुंदर त्यागीआहार निवास के नाम से करीब आठ लाख रुपयों की लागत से श्री धर्म प्रेमी, धर्मानुरागी नेमिनाथ गुलाबचंद बेककीरि, कलबुर्गी निवासी ने बंधवाके क्षेत्रार्पण किया।

यहाँ पर वर्ष के १२ महीने आने जानेवाले यात्रियों को निशुल्क भोजन की व्यवस्था है। इस यात्री आहारनिवास को लगकर १२ कमरों का एक यात्री निवास बनाया गया है। यहाँ यात्रियों की रहने की अच्छी सुविधा

अतिशय क्षेत्र कमठाण परसिरका विहगंम द्रश्य

उपलब्ध है। पूरे परिसर की सुरक्षा की दृष्टि से बौंड्रीवाल बनाया गया है। जिसे १० फीट उचाँई तक बांधने की योजना रहकर दो चार वर्षो में काम पूरा करने की योजना है।

मंदिर परिसर में पानी की व्यवस्था के लिए दो बावडी और २ बोरवेल की सुविधा कर के पानी की अच्छी व्यवस्था की गई है। कभी भी पानी की किल्लत महासूस नही होती है। यहाँ पर हर वर्ष माघ शुद्ध ५ से माघ शुद्ध ७ तक रथयात्रा महोत्सव का आयोजन होता है। इस भाग का यह महत्वपूर्ण वार्षिक रथ यात्रा माना जाता है। इस यात्रा महोत्सव में करीबी राज्य आंध्र, तेलंगाना और महाराष्ट्र तथा कर्नाटक से हजारों भक्त गण भाग लेकर पुण्य प्राप्ति के भागीदार बनते हैं। महीने के हर एक अमवास्या के दिन यहां पर विशेष पूजा, अर्चना, पंचामृत महाभिषेक का तथा महाप्रसाद की व्यवस्था का अच्छे ढंग से आयोजन होकर इस समय करीब ३००-४०० भक्त वृंद उपस्थित रहते है तथा पुण्य प्राप्ति के भागीदार बनते है। यहाँ वर्ष के १२ महीने आने जाने वाले भक्तजनों के लिए तथा यात्रा महोत्सव मे तीन दिन तक महाप्रसाद की सुचारू ढंग की व्यवस्था के लिए एक आहार समिति की रचना हुई है। इसका शुल्क शाश्वत अहारनिधी के रूप में बना कर, आहारनिधी सदस्यता राशी ४००१ रुपये रखा गया है। जिससे अभी ४६४ व्यक्ति जुडे हुवे है। इसी निधी के आय से यहाँ शाश्वत आहार की व्यस्था की जाती है। इस प्रकार के सुंदर मनोज्ञ वातावरण के कमठाण परिसर में एक बार आया हुआ व्यक्ति या परिवार बार बार आता है। जी व्यक्ति एक दिन के प्रवास के लिए आता है वह और एक दिन रहकर जाता है।

यहाँ पर अन्य गांव शहरीं के लोग और चार, पाँच परिवार वाले मिलकर एक दो दिन का वास्तव्य करके उस अवधी में विधान, हवन आदि करके मन को संतुष्ट करके पुण्य प्राप्त कर लेते है। यहाँ वर्ष भर कुछ न कुछ धार्मिक कार्यक्रम चलते ही रहते है। मंदिर का परिसर कहता है की "आप भी आइए, अपनों को भी बुला लाईए, है मनुष्य मन की शांति के लिए भटकने वाले कृपा करके यहाँ आईए और भगवान के शांति जप की साधना में बैठिए और शांति तथा पुण्य पाकर अपने को धन्य मानिए""।

१९९२ में हैद्राबाद के धर्मप्रमी श्री पुस्पेंद्रकुमार जी जैन महान उद्यागपती जी ने मुनि निवास बंधवाके क्षेत्रापर्ण किये जो मुनियें के लिये अति आवश्यक था।

'सर्व मंगल मांगल्य सर्व कल्याणकारकम' यह वाक्य इस क्षेत्र में सार्थक सिद्ध होता है। जिनभक्तों के निरंतर श्रमण से तथा क्रुशी मुनियों की आवागामन से अनेक त्यागीयों की चातुर्मास आचरण से निरंतर विधानों की आयोजन से यह परिसर पावन होगया है। अहीसा तत्व का नारा 'जियो और जीने दो' का सदा सफल रूप आपको यहाँ देखने को मिलता है। और यह तत्व यहाँ पूरी तरह सफल हुवा है। यहाँ पर पहले गुरुकुल (विध्याकेद्र) था, ऐसा बहोत से लोगों का कहना है। अत: अब एक गुरुकुल की स्थापना का उद्देश कमेटी के सामने रह कर अगर श्रक्तों की उदारदान सहायता प्राप्त होता है तो, आने वाले दिनों में यहाँ गुरुकुल की स्थापना भी होगी, ऐसी आशा है।

मंदिर परिसर प्रवेशके लिए एक पुराना पूर्व दिशाका महाद्वारा था जो जीर्ण शीर्ण अवस्था में था जिसे पंचकमेटी ने सुंदर ढग से नवीनीकरण करके देखने वालों की नजर लग जाय ऐसा बनाया है। मंदिर प्रवेश के लए उत्तर महाद्वारा ठीक रहता हैं ऐसा जानकर प.पू. आचार्य श्री सौभाग्य सागरजी मुनि महाराज जी की पावन प्रेरणा एवंम आशीर्वाद से बीदर नगर के प्रतीष्ठित व्यक्ति श्री श्रेठ मोहन पार्श्वनाथ बेककीरि बीदर इन्होने पाँच लाख की लागत से उत्तर महाद्वार को पुराने उत्तर भारत की शैली के महाद्वार के रूप में निर्माण कराकर क्षेत्रापर्ण किये है।

आने जाने वाले लोगों की रहने की सुविधा के लिए एवमं मंदिर में निरतंर चलने वाले धार्मिक क्रिया कलाप के लिए गर्भगृह के आजू बाजू में दो बड़े भवनों का निर्माण करके उनको प.पू. आचार्यश्री श्रुत सागर मुनिमहाराज प्रवचन हॉल एवं एक को आर्यनंदी मुनि महाराज स्मृती भवन नाम दिया गया है।

यहाँ पर स्नान गृह एवं शैचालयों की व्यवस्था, एव निरंतर पानी की व्यस्था रहकर यात्रियों को ठहरने की अच्छी व्यवस्था उपलब्ध है। परिसर तक आनेकेलिए मुख्य मार्ग से मंदिर तक डांबरीकरण किया हुवा साफ सुथरा रोड आपको मंदिर तक पहुंचा देगा। मंदिर परिसर में अच्छी बिजली का व्यवस्था भी उपलब्ध है।

इस परिसर में यात्रियों की और सुविधा केलिए और १२ कमरे, स्नाननृह, एवम शैचालय और बड़ा एक सभाभवन, आदि के निर्माण की योजना पंच कमेटी के सम्मुख रहकर दानीयों की उदार सहायता की राह देख रहा है। इसी के साथ साथ और १६ कमरे (आधुनिक सुविधा से युक्त कमरे का यात्री निवास जिसमें छोटा पकवान गृह, शौचालय, स्नानगृह आदि, ए.सी. और गीजर जैसे आधुनिक सुविधा निर्माण की भी योजना रह कर सरकार के अनुदान कि राह देख रहे हैं। यहाँ पर विवाह के लिये बडा सा मंगल कार्यालय बनवाने का योजना भी कमेटी के सम्मुख हैं।

कमठाण अतिशय क्षेत्र परसिर मे चल रहे विविध बांधकाम का द्रश्य

बीदर लोकसभा सदस्याजी की शासकनिधी से ११ आसन (चैयर) की व्यवस्था की गई है। हरटीकल्चरल विभाग के सहयोग से पूरे परिसर में गार्डन (बगीचा) का निर्माण और क्षेत्र के शासक महोदय जी के शासक निधी से बच्चों के खेलने की लिए झूले आदि की भी व्यवस्था तथा दानियों के उदार हस्त की दान, सहायता से परिसर मे एक बड़ा जनरेटर भी लगाने की योजना कमेटी के विचाराधीन है। आप भी अपनी सहयोग की धन राशि इस अतिशय क्षेत्र में भेजकर क्षेत्र की अभिवृद्धी एवम उन्नती में सहयोग करके पुण्य प्राप्ती के भागीदार बने। कृपया दान, सहायता के विचार रखने वाले ट्रस्ट के खाते में धनराशि जमा कर सकते हैं।

डोंगरगढ़ में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का प्रथम समाधि स्मृति दिवस अगाध श्रद्धा पूर्वक मनाया गया

100 रुपये के स्मारक सिक्के एवं डाक आवरण का गृहमंत्री ने किया लोकार्पण

गृहमंत्री माननीय अमित शाह, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आचार्य श्री विद्यासागर जी की समाधि स्थली के दर्शन किये। 06 फरवरी 2025 को संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का प्रथम समाधि स्मृति दिवस समाधिस्थल डोंगरगढ़ में निर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागर जी महाराज सहित अनेक साधुओं, आर्यिका माता जी के सान्निध्य में देश के गृहमंत्री श्री अमित शाह के मुख्य आतिथ्य में मनाया गया।

समाधि स्थल के किए दर्शन : इस दौरान दोपहर 1 बजे माननीय श्री अमित शाह भारत के गृह मंत्री, [redacted] राज्य सभा सांसद श्री नवीन जैन, छत्तीसगढ़ के वित्त मंत्री श्री ओ. पी. चौधरी एवं राजनांदगांव सांसद श्री संतोष पाण्डेय आदि ने श्री दिगम्बर जैन चंद्रगिरी अतिशय महातीर्थ क्षेत्र में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी की समाधि स्थली के दर्शन किये।

चरण चिह्न और समाधि स्मारक का हुआ भूमिपूजन : गृहमंत्री अमित शाह जी ने 108 अष्टधातु से निर्मित आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के चरण चिह्न का लोकार्पण किया और वहाँ बनने वाले समाधि स्मारक का भूमि पूजन कर शिला स्थापित की। तत्पश्चात मंच पर पहुंचकर उपस्थित मुनि संघ एवं आर्यिका संघ के दर्शन कर श्रीफल चढ़ाया और आशीर्वाद लिया।

अतिथियों का स्वागत : अतिथियों का पगड़ी ,पहनाकर, माला पहनाकर एवं तिलक लगाकर स्वागत किया गया।

100 रुपये के सिक्के एवं डाक आवरण का लोकार्पण : गृहमंत्री, मुख्यमंत्री आदि ने भारत सरकार द्वारा जारी आचार्यश्री के चित्र वाले 100 रूपए के सिक्के का विमोचन किया गया। आचार्य श्री के नाम एवं

चित्र वाला स्पेशल कवर डाक लिफाफे का विमोचन किया गया।

कृतियों का विमोचन : ऐलक धैर्य सागर महाराज जी द्वारा रचित "अंतर्यात्री महायात्रा" नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। निर्यापक श्रमण श्री समतासागर महाराज जी द्वारा रचित "समाधि संबोधन" नामक पुस्तक का विमोचन किया गया।

निःशुल्क कन्या विद्यालय का लोकार्पण : गृहमंत्री ने डिजिटल माध्यम से प्रतिभास्थली विद्योदय ज्ञानपीठ रोजगारोन्मुखी निःशुल्क कन्या विद्यालय, [redacted] डिंडोरी मध्य प्रदेश का लोकार्पण किया। जहाँ छात्राओं को पढ़ाई के साथ – साथ रोजगार की शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

अलौकिक व्यक्तित्व आचार्यश्री : गृहमंत्री अमित शाह देश के गृहमंत्री अमित शाह जी ने अपने उद्बोधन में कहा की आज युगपुरुष को, ईश्वर तुल्य महापुरुष के कार्यों को कार्यांजलि देने का दिन है। यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के पहले 5 बार दर्शन किया हूँ और उनसे काफी चर्चायें भी हुई हैं। उन्होंने हमेशा सबसे पहले अपने देश की प्रगति के बारे में अपने विचार रखे हैं। उनका व्यक्तित्व इतना प्रभावकारी है की जिससे संयम और त्याग के भाव स्वतः ही होता है। उनका सम्पूर्ण जीवन त्याग, तपस्या और संयम के साथ व्यतीत हुआ।

युगपुरुष थे आचार्यश्री : "आचार्य श्री जैनाचार्य ही नहीं बल्कि युगपुरुष थे। उन्होंने नये विचारों के साथ युग का परिवर्तन किया ऐसा उनका जीवन था" उपरोक्त विचार भारत के गृहमंत्री अमितशाह ने डोंगरगढ़ की वह

पवित्र भूमी जिसे आचार्य गुरुदेव विद्यासागरजी महाराज ने अपनी समाधि के लिये चुना उनकी समाधि के ठीक एक वर्ष बाद आयोजित "विद्यायतन" के भूमिपूजन एवं शिलान्यास समारोह में श्रद्धांजलि देते हुये व्यक्त किये। उन्होंने लगभग 20 मिनट के उद्बोधन में आचार्य गुरुदेव के द्वारा धर्म और संस्कृति की चर्चा करते हुये कहा कि यह उनकी तप साधना का ही प्रभाव है कि जब मैं उनसे पहले मिला तो उनके चिंतन में देश की भाषा और संस्कृति की झलक मिलती थी, उनका विचार था कि देश की सभी भाषाओं का सम्मान होना चाहिये।

इंडिया की जगह भारत होना आचार्यश्री की ही देन है : गृहमंत्री अमित शाह जी ने कहा कि भारत को इंडिया नहीं भारत कहने पर जोर दिया तो हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी ने सबसे पहले उसे स्वीकार किया। भारत की पहचान इंडिया नहीं भारत होना चाहिये। उन्होंने कहा कि जब "जी-20" का निमंत्रण विश्व भर में गया तो "प्राईम मिनिस्टर आफ भारत" के नाम से गया। उन्होंने कहा भगवान महावीर के सिद्धांत **"अहिंसा परमोधर्म:"** के सिध्दांत को मात्र कहा ही नही उसको जिया भी है। उनके लाखों -करोड़ों अनुयायियों और भक्तों में से मैं भी एक भक्त हूँ और आज मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूं कि एक वर्ष बाद आयोजित स्मृति महोत्सव में उनको श्रद्धांजलि देने उपस्थित हुआ हूं।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़ राज्य के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय एवं राज्यसभा सदस्य श्री नवीन जैन ने भी अपना उद्बोधन दिया।

जहाँ भी नजर उठाकर देखोगे वहीं आपको गुरवर के दर्शन मिलेंगे : निर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागर जी :

इस अवसर पर निर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागर महाराज ने प्रातःकालीन धर्म सभा में कहा कि "गुरु के चरण इसलिये पूज्यनीय हैं क्योंकि उन चरणों का आचरण जीवन भर पूज्यनीय और आदर्शमय रहा है। संपूर्ण भारत से आज अतिशयक्षेत्र चंद्रगिरी डोंगरगढ़ में भगवान चंद्र प्रभु और गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज को अर्घ्य समर्पित करके सौभाग्यशाली समझ रहे हैं।

आप लोग यह मत समझना कि गुरुवर हमारे बीच में नहीं हैं,आप जहाँ – जहाँ भी नजर उठाकर देखोगे वहीं आपको गुरवर के दर्शन मिलेंगे।

संतों का सान्निध्य : इस अवसर पर मुनि श्री पवित्रसागर जी, मुनि श्री आगमसागर जी,मुनि श्री पुनीत सागर जी, वरिष्ठ आर्यिका गुरुमति माताजी ,आर्यिकारत्न दृढमति माताजी, आर्यिकारत्न आदर्शमती माताजी सहित सैकड़ों की संख्या में आर्यिका माताऐं तथा ऐलक श्री निश्चयसागर जी,ऐलक श्री धैर्यसागर जी,ऐलक श्री निजानंद सागर जी, ऐलक स्वागत सागर जी, क्षु. संयम सागर जी महाराज के साथ सैंकड़ों की संख्या में उदासीन आश्रम इंदौर, जबलपुर, सागर,से साधनारत ब्रह्मचारी एवं साधनारत प्रतिभास्थली की बहनें तथा हजारों की संख्या में अध्ययन करने वाली छात्राएं एवं भारत के प्रमुख नगरों से श्रावक -श्राविकाएं उपस्थित थी। इस अवसर पर ब्र. रेखा दीदी ने भी सम्बोधित किया।कार्यक्रम का संचालन श्री चंद्रकांत जैन ने किया।

अभिषेक, शांतिधारा व आचार्यश्री की पूजन : राष्ट्रीय प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी, प्रचार प्रमुख निशांत जैन, सप्रेम जैन ने बताया कि प्रातःकाल भगवान का अभिषेक, शांतिधारा व आचार्यश्री की पूजन भारत के श्रावक श्रेष्ठी देश के भामाशाह श्री अशोक पाटनी,प्रभात जी मुम्बई के द्वारा संपन्न की गयी एवं मुनिश्री को पड़गाहन कर आहार दैने का सौभाग्य भी मिला। शांतिधारा का निर्यापक मुनि श्री समतासागर महाराज जी ने मंत्रोच्चारण किया।

प्रमुख श्रेष्ठिवर्ग रहे उपस्थित : प्रातःकाल से ही समूचे भारत के श्रेष्ठी गण जिसमें श्री अशोक जी पाटनी, श्री प्रभातजी मुम्बई, राज्यसभा सदस्य श्री नवीन जैन (pnc), श्री सुधीर जैन दिल्ली, विद्यायतन के अध्यक्ष श्री विनोद बड़जात्या, महामंत्री श्री निखिल जैन, श्री मनीष जैन, श्री दीपेश जैन, श्री अमित जैन, श्री नरेश जैन, चंद्रगिरी तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री किशोर जैन, श्री सुभाष जैन, श्री निर्मल जैन, श्री विनोद जैन कोयला, श्री नवीन जैन दिल्ली, अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री प्रकाश मोदी भाटापारा, प्रदीप जैन (विश्वपरिवार) आदि जैन समाज के गणमान्य उपस्थित थे।

'मूकमृत्तिका' महाकाव्य एवं 'धीवरोदयम्' चम्पूकाव्य का भव्य लोकार्पण समारोह एवं राष्ट्रिय विद्वत्संवाद सफलता पूर्वक हुआ सम्पन्न

सम्पूर्ण मानवता के लिए एक अमूल्य निधि है आचार्यश्री का साहित्य : आचार्य श्री समयसागर जी महाराज

संत शिरोमणि आचार्यश्रेष्ठ श्री विद्यासागर जी महाराज की कालजयी कृति 'मूकमाटी' के संस्कृत अनुवाद 'मूकमृत्तिका' एवं "धीवरोदयम् चंपूकाव्य' का भव्यातिभव्य लोकार्पण समारोह व राष्ट्रीय विद्वत्संवाद 11 व 12 जनवरी 2025 को दो दिवसीय आयोजन सतना, मध्यप्रदेश में दिगम्बर जैन समाज सतना के आयोजकत्व में परमपूज्य आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज जी महाराज, निर्यापक श्रमण श्री अभयसागर जी महाराज, आर्यिका श्री ऋजुमती माता जी सहित 16 मुनिराज, 11 आर्यिका, 11 क्षुल्लक जी के मङ्गल सान्निध्य में अभूतपूर्व सफलता के साथ संपन्न हुआ। संयोजक डॉ ब्र. धर्मेन्द्र भैया, जयपुर एवं डॉ. सोनल कुमार जैन, दिल्ली रहे। निर्देशक पंडित सिद्धार्थ जैन, सतना एवं प्रबंध संयोजक पंडित महेश जैन सतना रहे। संतशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की समाधि के उपरान्त उनकी जीवन्त स्मृतियों की छाया में उनकी कालजयी कृतियों पर दो दिन में चार सत्रों में सारगर्भित चर्चा- परिचर्चा हुई।

'मूकमृत्तिका' एवं ''धीवरोदयम् चंपूकाव्य' का भव्यातिभव्य लोकार्पण : इस मौके पर 11 जनवरी को 'मूकमृत्तिका' का भव्य लोकार्पण विद्वानों एवं अतिथियों द्वारा किया गया। मूकमाटी का संस्कृत अनुवाद संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान प्रोफेसर अभिराज राजेन्द्र मिश्र, शिमला ने किया है। "धीवरोदयम् चंपूकाव्य' का विमोचन 12 जनवरी को अतिथियों और विद्वानों द्वारा किया गया। कृतियों के कुशल संपादक प्रोफेसर जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, डॉ. ब्र. धर्मेन्द्र कुमार जैन, जयपुर एवं डॉ. सोनल कुमार जैन, दिल्ली ने कृतियों का विमोचन कराने के बाद आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के कर कमलों में एक-एक प्रति भेंटकर आशीर्वाद लिया।

सम्पूर्ण मानवता के लिए अमूल्य निधि आचार्यश्री का साहित्य : इस अवसर पर आचार्य श्री समयसागर जी महाराज ने कहा कि आगम अथाह है, श्रुत का अंत नहीं है, समय कम है। 'मूकमाटी' क्या कह रही है इसको समझो। गुरुदेव ने जो कहा है वह आत्मसात हो जाय तो मूक माटी की सार्थकता है। पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अवर्णनीय साधक थे। उनको तलस्पर्शी ज्ञान था।

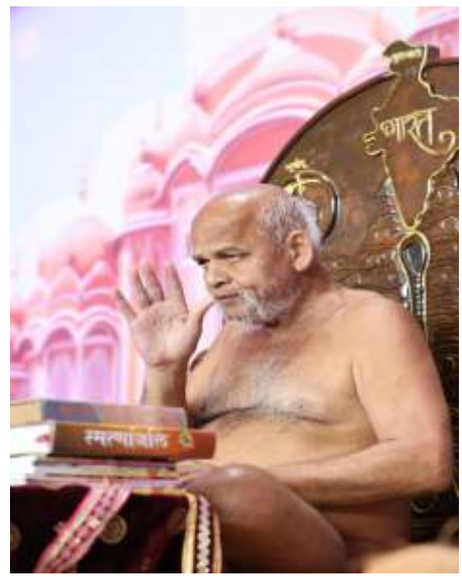

आचार्यश्री ने कहा कि मन को संयमित करना बहुत कठिन है। जो ज्ञान के साथ-साथ चारित्र के क्षेत्र में आगे बढ़ता है उसी का मन संयमित हो सकता है। आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी ने कहा था कि तुम पुण्य के उदय में दीक्षित हो गए हो लेकिन मन को संयमित रखना। आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज ने साधना के साथ-साथ साहित्य का सृजन किया। आचार्य विद्यासागर जी की विद्वत्ता, तपस्या, और आध्यात्मिक उत्कर्ष का प्रतिबिंब उनके साहित्य में देखा जा सकता है। मूकमाटी महाकाव्य में आचार्य गुरूदेव विद्यासागरजी ने अपनी गहन आध्यात्मिक समझ और ज्ञान के ताने -बाने को बड़ी ही रोचकता से काव्य के माध्यम से साझा किया है। गुरुदेव के साहित्य में जीवन की सार्थकता, आध्यात्मिक जागृति और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाने वाले विचारों का समावेश है।

दो दिवसीय विद्वत्संगोष्ठी में सबने आनंद की अनुभूति का अनुभव किया है, यह अवर्णनीय है । आचार्य श्री समयसागर जी महाराज ने संगोष्ठी में आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज से जुड़े अनेक प्रसंग भी सुनाए। आचार्यश्री द्वारा दिये गये सारगर्भित प्रवचनों से अपने मन और इन्द्रियों को जीतकर संयमित होकर मनुष्य पर्याय सार्थक करने का

प्रभावी सन्देश सभी को प्राप्त हुआ है।

50 विश्वविद्यालयों में मूकमाटी महाकाव्य पाठ्यक्रम में है शामिल : निर्यापक मुनि श्री अभयसागर जी

आयोजन में निर्यापक श्रमण मुनि श्री अभयसागर जी महाराज के तथ्यपरक संस्मरणात्मक प्रवचन एक अविस्मरणीय दुर्लभ उपलब्धि रही है। उन्होंने बताया कि आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज सहजता और सरलता से अपनी बात हम शिष्यों को सिखा देते थे। गुरुदेव की प्रेरणा से 156 गौशालाएं चल रही हैं। 'दयोदय एक्सप्रेस' का नाम आचार्यश्री की प्रेरणा से ही हुआ था। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी गुरुदेव के दर्शन करने आए थे तब आचार्यश्री गुरुदेव ने उनसे कहा था कि देश को प्रगति की ओर ले जाना है तो 'आत्मनिर्भर भारत' बनाओ। तभी से प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत की बात शुरु कर दी थी। नई शिक्षा नीति में मानव मात्र के लिए, देश की उन्नति के लिए आचार्यश्री के अनन्त उपकार हैं।

गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज ने 25 अप्रैल 1984 में जबलपुर (म.प्र.) में 'मूकमाटी' लिखना शुरू की थी तथा 11, फरवरी 1987 को सिद्धक्षेत्र नैनागिरी (छतरपुर) में इसका समापन किया था। 1023 दिन में यह कृति पूर्ण हुई थी। उन दिनों जो देश में आतंकवाद के कारण जो विषम परिस्थितियां थीं उनका वर्णन मूकमाटी में किया गया है। देश के 50 विश्वविद्यालयों में 'मूकमाटी' महाकाव्य पाठ्यक्रम में शामिल है। मूकमाटी का 12 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। धीवरोदय गुरुदेव ने 1998 में लिखना शुरू किया था और 2001 में नेमावर में इसका समापन किया था।

प्रमुख विद्वान रहे शामिल : आयोजन में प्रमुख रूप से प्रोफेसर अभिराज राजेन्द्र मिश्र शिमला, प्रोफेसर जानकीप्रसाद द्विवेदी वाराणसी, शास्त्रि परिषद के अध्यक्ष डॉ श्रेयांस कुमार जैन- बड़ौत, श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के अधिष्ठाता डॉ. जय कुमार जैन- मुजफ्फरनगर, विद्वत्परिषद के अध्यक्ष प्रोफेसर अशोक कुमार जैन -वाराणसी, शास्त्रि परिषद के महामंत्री ब्र. जय कुमार निशान्त -टीकमगढ़ , ब्र. विनोद भैया - छतरपुर, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन भारती -बुरहानपुर, ब्र. जिनेश मलैया -इंदौर, ब्र. मनीष भैया ज्ञान -जहाजपुर, प्रतिष्ठाचार्य विनोद कुमार जैन -रजवांस, पंडित महेश जैन -सतना, ब्र. अशोक भैया, डॉ. ब्र. अनिल जैन प्राचार्य- जयपुर, पंडित सिद्धार्थ जैन- सतना, डॉ. सुनील जैन संचय -ललितपुर, डॉ. सोनल कुमार जैन- दिल्ली, डॉ. आशीष कुमार जैन -सागर , डॉ. पंकज कुमार जैन -इंदौर, 'आकाश' -वाराणसी, डॉ. शैलेश जैन- बाँसवाड़ा, डॉ . आशीष जैन बम्होरी- दमोह, पंडित विनोद शास्त्री -गौना, पंडित अभिषेक शास्त्री- सागर, पंडित शिखर जैन -दिल्ली, प्रोफेसर संगीता मेहता- इंदौर, ब्र. वीरेंद्र कुमार जैन शास्त्री- हीरापुर, पंडित संजीव जैन शास्त्री -महरौनी, डॉ. नीलम जैन -ललितपुर, पंडित सुदर्शन जैन- पिण्डरई, पंडित हेमंत जैन शास्त्री आदि विद्वान प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। जिन्होंने चर्चा-परिचर्चा में भाग लिया।

गणमान्य अतिथिगण हुए शामिल : इस मौके पर राजकुमार आचार्य, कुलगुरु, अवधेशप्रताप विश्वविद्यालय रीवा, डॉ. भरत मिश्रा कुलगुरु ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, ए. के. एस. विश्वविद्यालय के कुलगुरु बी ए चौपड़े, ए. के.एस. विश्वविद्यालय के डॉ. डी. के. राय प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय सतना, डॉ. अशोक भौमिक कृषि वैज्ञानिक, माननीया प्रतिमा बागरी राज्यमंत्री मध्यप्रदेश सरकार, अमरपाटन (सतना) विधायक सुरेन्द्र सिंह गहरवार, आर के श्रीवास्तव, आर के त्रिपाठी प्रति कुलपति, कवि चंद्रसेन जैन, वास्तुविद राजेन्द्र जैन आदि अतिथिगण प्रमुख रूप से मंचासीन रहे।

विभिन्न कृतियों का भी हुआ विमोचन : आयोजन में दृष्टांत समुच्चय, स्मरणांजलि (पंडित गुलाबचंद्र पुष्प), भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की डाक टिकट एवं डाक आवरण, आचार्य श्री विद्यासागर जी पर भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी विशेष आवरण संग्रह, सर्वोदयी संत की राष्ट्रीय देशना, मिरेकल, ध्यानोपदेश, लघु नयचक्र, परमागमसार, जैन विद्या ज्योतिष पंचांग, संस्कार सागर पत्रिका (जनवरी अंक) आदि अनेक कृतियों का विमोचन किया गया।

प्रत्येक भारतीय के लिए प्रणम्य है मूकमाटी : अवधेश प्रतापसिंह विश्वविद्यालय रीवा के कुलगुरु राजकुमार आचार्य ने कहा कि मूकमाटी एक ऐसा ग्रंथ है जो प्रत्येक भारतीय के लिए प्रणम्य है। उन्होंने 2021 का जबलपुर में आचार्यश्री के साथ संस्मरण सुनाते हुए कहा कि जब आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से पूंछा की नई शिक्षा नीति में क्या होना चाहिए? तो उन्होंने एक लाइन में उत्तर दिया था कि- 'शिक्षा में भारत को पढ़ाइये।'

आचार्यश्री की देन अविस्मरणीय : राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी

आयोजन में शामिल विशिष्ट अतिथि मध्यप्रदेश सरकार की राज्यमंत्री माननीय श्रीमती प्रतिमा बागरी ने कहा कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का योगदान अविस्मरणीय है। उनके दिखाए पदचिह्नों पर हम सभी चलें।

यशस्वी व्रती कवि श्री चन्द्रसेन जी भोपाल की गुरुभक्ति से ओतप्रोत काव्यपाठ के श्रवण से सभी श्रोता गुरुभक्ति में निमग्न हो गये।

दस देशों से आए श्रद्धालुओं ने लिया आशीर्वाद : इस मौके पर पुष्पकरणी पार्क सतना का नाम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के नाम से रखने की घोषणा की गई।आयोजन में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं आचार्य श्री समय सागर जी महाराज की पूजन भक्ति संगीत के साथ की गई जिसका मंत्रोच्चार आर्यिका ऋजुमती माता जी द्वारा किया गया। आयोजन में दस देशों से आए श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। अफ्रीका से नारियल लेकर आए अजीत गांधी मुंबई ने नारियल भेंट किया। इसी नारियल से कमण्डलु तैयार होते हैं।

मूकमाटी एनीमेशन फ़िल्म का किया गया प्रदर्शन : 11 जनवरी को रात्रि में 7.30 बजे से परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की कालजयी कृति मूकमाटी पर आधारित मूक माटी एनीमेशन फ़िल्म को दिखाया गया जिसे देखने श्रद्धालु उमड़ पड़े। संगोष्ठी में समागत विद्वानों ने भी फ़िल्म को देखा और इसे बहुत ही अच्छा

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर ने 'भारत में सबसे पहले " भारत' नाम अपनाने पहल की।
-अजैन संत और विद्वानों ने महाकुंभ में सिर्फ़ भारत स्थापित करने का लिया संकल्प

- निर्मलकुमार पाटोदी , इंदौर

आचार्य विद्यासागर जी महाराज ने अनेक बार अपने प्रवचनों में 'इण्डिया-हटाओ' 'भारत लौटाओ' के लिए आव्हान किया. उनके सभी आव्हानों को साकार करने के लिए गुरु-भक्तों ने पाँच वर्ष पहले-इंदौर में "सद्भावना पारमार्थिक न्यास" संस्था का गठन किया। भारत में सबसे पहले इंदौर स्थित देवी अहिल्या विश्वविद्यालय ने भारत में सबसे पहले विश्वविद्यालय की कार्य परिषद ने अपने यहां इस आशय का एक प्रस्ताव पारित कर लिया देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की कार्य परिषद का यह सराहनीय और अनुकरणीय प्रयास है। इससे देश भर में 'एक राष्ट्र, एक नाम : भारत' की अवधारणा को बड़ी सफलता मिलने का वातावरण बनेगा। विश्वविद्यालय द्वारा शुक्रवार १० जनवरी विश्वहिंदी दिवस पर एक अहम प्रस्ताव पारित किया कि वह देश के नाम के तौर पर हिंदी और अंग्रेजी में केवल 'भारत' शब्द इस्तेमाल करेगा वप्रयोग करने का प्रस्ताव पारित हुआ है। कुलगुरु प्रो. राकेश सिंघई, इंदौर ने शुक्रवार (१० जनवरी) को एक अहम प्रस्ताव पारित किया कि वह देश (Country) के नाम के तौर पर हिन्दी और अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में केवल 'भारत' (Bharat) शब्द का इस्तेमाल करेगा।

कुलगुरु डॉक्टर राकेश सिंघई ने बताया कि विश्वविद्यालय अपने सभी दस्तावेजों, उपाधियों,अंकसूचियों, देश-विदेश में होने वाले पत्र व्यवहार और रोजमर्रा के कामकाज में केवल 'भारत' शब्द का इस्तेमाल करेगा.* यह प्रस्ताव 'एक राष्ट्र, एक नाम-भारत' की अवधारणा के तहत विश्वविद्यालय की कार्य परिषद के एक सदस्य ने पेश किया जिसे ताली बजाकर पारित किया गया। इस तरह का प्रस्ताव पारित करने वाला संभवतः देश का पहला विश्वविद्यालय है. राज्य सरकार के १९६४ में स्थापित विश्वविद्यालय के कुलगुरु ने कहा, 'प्राचीन काल से हमारे देश का नाम भारत ही चला आ रहा है।

उन्होंने कहा, देश को 'इंडिया' नाम अंग्रेजों ने उनकी सुविधा के अनुसार दिया था. हमें हर जगह अपने देश का मूल नाम भारत ही इस्तेमाल करना चाहिए. सिंघई ने बताया कि वह अपने विजिटिंग कार्ड पर हिन्दी और अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में देश के नाम के तौर पर 'भारत' शब्द का इस्तेमाल लंबे समय से करते आ रहे हैं।

हसमुख जैन गांधी, प्राइड ऑफ सेंट्रल इंडिया अवार्ड से सम्मानित हुए: जीवन के एवरेस्ट पर बिना रेस्ट किये समाज सेवा में लीन

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय मंत्री प्रतिष्ठित उद्योगपति एवं देश-प्रदेश मैं सक्रिय दिगंबर जैन समाज की विभिन्न राष्ट्रीय संस्थाओं से जुड़े दिगंबर जैन समाज इंदौर के वरिष्ठ समाजसेवी श्री हसमुख जैन गांधी जिनकी कार्यशैली से अनेक साधु-संत एवं जैन समाज प्रभावित एवं परिचित है। अब जिनके व्यक्तित्व की प्रखरता व धर्म, समाज, संत, संस्कृति के प्रति निष्ठा वह समर्पण से परिचित होकर देश के सर्वाधिक प्रामाणिक एवं प्रसारित हिंदी दैनिक भास्कर ने भी आपको प्राइड ऑफ सेंट्रल इंडिया अवार्ड-24 से विभूषित कर जैन समाज को गौरवान्वित किया है।

जीवन के एवरेस्ट पर बिना रेस्ट समाज सेवा : इस उपलब्धि पर गांधी को दिगंबर जैन समाज के श्रेष्ठीजनों एवं उनके मित्रों, स्नेहियों ने बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए भावना व्यक्त की है कि गांधी भविष्य में भी जीवन के एवरेस्ट पर बिना रेस्ट किये समाज सेवा तीर्थ, धर्म व संस्कृति के क्षेत्र में सफलता पूर्वक कार्य करते हुए समाज को गौरवान्वित करते रहें और आपकी यश कीर्ति चक्रवर्ती ब्याज की गति से निरंतर द्विगुणित होती रहे।

मुख्यमंत्री ने घोषणा कर बताया भोपाल में बनेगा आचार्य विद्यासागर का स्मारक: प्रथम समाधि स्मृति दिवस पर विधानसभा में हुआ कार्यक्रम

मप्र के विधानसभा परिसर भोपाल में प्रथमबार किसी जैन संत का प्रथम समाधि स्मृति दिवस मनाया गया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि भोपाल में आचार्य विद्यासागर महाराज का स्मारक बनाया जाएगा। सीएम ने मुनि प्रमाण सागर जी महाराज के पाद प्रक्षालन किए। इससे पूर्व दिगंबर जैन मंदिर से शोभायात्रा निकाली गई। यात्रा रोशनपुरा चौराहा, मालवीय नगर, बिरला मंदिर होते हुए विधानसभा पहुंची। कार्यक्रम में आचार्य विद्यासागर महाराज के जीवन पर आधारित 25 किताबों का विमोचन भी हुआ। जैन समाज के अध्यक्ष ने भोपाल के रानी कमलापति रेलवे स्टेशन और मेट्रो स्टेशन का नाम आचार्य विद्यासागर के नाम पर करने की मांग की है। कार्यक्रम में सांसद आलोक शर्मा, पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह और पूर्व मंत्री पीसी शर्मा भी उपस्थित रहे।

आचार्य विद्यासागर देवता के रूप में विद्यमान : कार्यक्रम के दौरान सीएम मोहन यादव ने कहा, आचार्य विद्यासागर महाराज के भीतर जो मानव सेवा का भाव रहा है, उसके चलते वो जीते जी देवता के रूप में हम सब के बीच विद्यमान हैं। सीएम यादव ने गोमाता का जिक्र करते हुए कहा कि गोमाता के माध्यम से पूरी प्रकृति बदल सकती है। हम सबके जीवन में संपूर्ण बदलाव भी आ सकता है। गोमाता में वह भाव है, जो अपने बच्चों का ख्याल रखती है और मनुष्य के बच्चों का भी ख्याल रखती है।

आचार्य जी की स्मृति सहेजने के लिए उत्तम स्थान पर बनेगा स्मारक : सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि आचार्यश्री की स्मृति को चिरस्थायी बनाए रखने के लिए भोपाल में एक उत्तम स्थान बनाएंगे। आज आचार्य श्री का प्रथम समाधि दिवस है। मुझे वो पुराना दृश्य आंखों के सामने दिखाई दे रहा है, जब महाराज श्री यहां (विधानसभा) पधारे थे। अलौकिक व्यक्तित्व थे। उस वक्त ऐसा लग रहा था कि देवता हमारे बीच आए हैं। हमने आंखों से आमतौर पर मनुष्यों को ही देखा है। देखने में कई बार हमारा दृष्टिदोष हो सकता है लेकिन, कई बार जो होता है वो अलौकिक जीवन धन्य करने वाला होता है। महाराज जी कर्नाटक के हैं लेकिन, ऐसा लगता था कि वो हमारे मध्यप्रदेश और हमारे बीच से ही हैं।

बागपत (उ.प्र.) के बडौत में भगवान आदिनाथ के निर्वाण दिवस पर हुए हादसे में मृत परिवारों को सहयता देने के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने माननीय मुख्यमंत्री को लिखा पत्र

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
Bharatvarshiya Digambar Jain Tirthkshetra Committee
भारतीय सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अधीन पंजीकृत सं. 570/1930
बंबई सार्वजनिक न्यास अधिनियम 1950 के अधीन पंजीकृत सं. एफ-10/1952

पत्रांक 437 / 2025 सोमवार, 3 फरवरी 2025

प्रतिष्ठा में,
आदरणीय श्री योगी आदित्य नाथ जी,
माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार,
लखनऊ
सम्मान्य महोदय,

सादर अभिवादन -जय जिनेन्द्र

भारत में जैन समाज की सबसे प्राचीन राष्ट्रीय संस्था, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष के रूप में, इस पत्र के माध्यम से आपके प्रति अंतर्मन की प्रणति के भाव अर्पित है, क्योंकि मेरा यह विश्वास है कि आप भारत की राष्ट्रवादी संस्कृति की परमोज्ज्वल धारा के समर्थ और सत्यान्वेषी सार्थवाह है और जाति–धर्म–सम्प्रदाय से परे समस्त मानव जाति के वैश्विक मित्र के रूप में प्रतिष्ठित है, आपका घर, पूरी धरा है और धरा के हर जीव के साथ आपको प्यार है–अनुराग है। आपके उदात्त व्यक्तित्व का गुणानुवाद करते हुए अपनी आदरोन्मुख भावनाएं संप्रेषित करता हूं और अपना सादर प्रणाम अर्पित करता हूं।

परमादरणीय महाकुंभ के प्रयागराज स्थित महा आयोजन में संगम तट पर हुई दुर्घटना के कारण पुण्यात्मा बंधुओं के असामयिक निधन के पूरे देश को झकझोर दिया है। मैं तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं सकल जैन समाज की ओर से दिवंगत बंधुओं के प्रति अपने अंतर्मन की संवेदनाएं अर्पित करता हूं। इस दुखद प्रसंग पर आपकी जनोन्मुखी सरकार ने जिस प्रकार अत्यल्प कालावधि में स्थिति को नियंत्रित किया, वह आपके जन सेवा के व्रत को रेखांकित करता है। आपके प्रशासनिक कौशल के प्रति मेरा गहरा आदर हो।

परम श्रद्धेय, यह दुर्योग ही तो था कि बड़ौत में 28 जनवरी का दिन एक अन्य त्रासदी का साक्षी बना। भगवान आदिनाथ के मोक्ष कल्याणक के आयोजन में अभिषेक–पूजन–अर्चन के समय दुर्योग से घटी दुर्घटना में स्थानीय समाज के सात लोगों के निधन की सूचना मिली। कई लोग गंभीर रूप से घायल भी हुए है। स्थानीय प्रशासन ने आपके निर्देश पर त्वरित कार्यवाही की, जो आपके संवेदनशील प्रशासनिक कौशल का प्रतीक है।

उपरोक्त सन्दर्भ में आपश्री से सादर अनुरोध करना चाहता हूं कि बड़ौत जैन समाज के जो सात लोग काल–कवलित हो गए है, यथा 1. श्री अरुण कुमार जैन पुत्र श्री केशव राम जैन, पारसनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, नेहरू रोड, बड़ौत, 2. श्री विपिन कुमार जैन पुत्र श्री सुरेन्द्र जैन, जैन स्थानक, नई मन्डी, बड़ौत, 3. कु. शिल्पी जैन पुत्री श्री सुनील जैन, अतिथि भवन, बड़ौत, 4.

शेष पेज 2 पर.....

कैम्प कार्यालय -II-C-201, नेहरू नगर, गाजियाबाद-201001 (उ.प्र.) मो: 7217756871
E-mail: bvdjtccamp@gmail.com
प्रधान कार्यालय: द्वितीय तल, हीराबाग, कस्तूरबा गांधी चौक, सी.पी.टैंक, मुम्बई – 400004आधिकारिक जालस्थल Website : www.tirthkshetracommittee.Com

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
Bharatvarshiya Digambar Jain Tirthkshetra Committee
भारतीय सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अधीन पंजीकृत सं. 570/1930
बंबई सार्वजनिक न्यास अधिनियम 1950 के अधीन पंजीकृत सं. एफ-10/1952

सोमवार, 3 फरवरी 2025

(2)

श्री तरसपाल जैन पुत्र स्व. श्री हुकुमचन्द जैन, विहर्ष समाचार बड़ौत, 5. श्रीमती कमलेश जैन पत्नि श्री सुरेश जैन, आर्य मंडप, बुढाना रोड नहर पुल, बड़ौत, 6. श्रीमती उषा धमीजा, पत्नि श्री सुरेन्द्र जैन, बांके बिहारी मन्दिर, पुराना रोड, बड़ौत तथा 7. श्री अमित जैन पुत्र श्री नरेश जैन, जैन स्थानक निकट संजय मूर्ति, बड़ौत के परिवारों को आर्थिक राहत दिलाये जाने का निर्णय लेने की कृपा करें। ज्ञातव्य है कि महाकुम्भ में आपश्री ने दिवंगतों को ऐसी राहत देने के निर्णय के अंतर्गत 25 लाख रूपये के अनुदान की घोषणा कर दुखी परिजनों को धैर्य बोध कराया है। साथ ही सत्तर से अधिक घायल भाईयों–बहनों को भी उपचार आदि की सुविधा के अंतर्गत पर्याप्त आर्थिक सहायता देने की भी कृपा करें।

आपसे विनम्रतापूर्वक अनुरोध करता हूं कि मेरे निवेदन पर सहानुभूति पूर्वक विचार करते हुए पीड़ितों को राहत देने की महती कृपा कर अनुग्रहीत करने की कृपा करें।

कृपार्थ आभार शुभाशंसाओं सहित,

भवनिष्ठ,

(जम्बू प्रसाद जैन)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

कैम्प कार्यालय -II-C-201, नेहरू नगर, गाजियाबाद-201001 (उ.प्र.) मो: 7217756871
E-mail: bvdjtccamp@gmail.com
प्रधान कार्यालय: द्वितीय तल, हीराबाग, कस्तूरबा गांधी चौक, सी.पी.टैंक, मुम्बई – 400004आधिकारिक जालस्थल Website : www.tirthkshetracommittee.Com

भगवान महावीर व ऋषभदेव जयंती पर राज्यसभा में अवकाश की मांग: सांसद के. लक्ष्मण ने मुद्दा उठाया

राज्यसभा सांसद के. लक्ष्मण ने राज्यसभा में भगवान ऋषभदेव अर्थात आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं पूरे भारतवर्ष में भगवान महावीर जयंती पर सार्वजनिक अवकाश की मांग को बेहतरीन तरीके से उठाया। जैन पत्रकार महासंघ की स्वाति जैन, हैदराबाद के द्वारा कुछ समय पूर्व एक ज्ञापन हैदराबाद में के लक्ष्मणजी को दिया गया था। उन्होंने आश्वासन दिया था कि मैं यह मांग संसद में जरूर उठाऊंगा और आज उन्होंने अपना वादा पूरा कर दिया।

महासंघ की बैठक में लिया था निर्णय : जैन पत्रकार महासंघ की कुछ दिन पूर्व जयपुर में हुई मीटिंग में भी ये निर्णय लिया गया था कि संपूर्ण भारतवर्ष में महावीर जयंती का अवकाश हो और उसी के साथ ऋषभदेव जन्म कल्याणक पर सार्वजनिक अवकाश घोषित किया जाए। यह मांग धर्म जागृति संस्थान द्वारा भी बड़ी मुस्तैदी के साथ उठाई जा रही है और समय-समय पर कई ज्ञापन सभी राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा दिए गए हैं।

सभी समाजजन मांग करे - सभी समाजजन चाहते हैं कि भगवान ऋषभदेव जन्म कल्याणक पर सार्वजनिक अवकाश तो घोषित हो ही साथ ही पूरे देश में भगवान महावीर जयंती पर भी देश में महावीर जयंती का अवकाश हो। अभी कुछ राज्यों में इस तरह का अवकाश नहीं रखा गया है। यह मांग प्रबल होती जा रही है। सभी समाजजनों से निवेदन है कि एक छोटासा सहयोग आप भी करें जिससे कि यह मांग अति शीघ्र पूर्ण हो सके।

परम तीर्थभक्त आदरणीय श्री पन्नालालजी पापड़ीवालजी को भावभीनी श्रृद्धांजलि

अत्यंत दुःखद एवं हृदय विदारक है कि आदरणीय बाबूजी श्री पन्नालाल जी पापड़ीवाल का दिनांक ०७-०२-२०२५ को दुखद निधन हो गया है। यह ऐसा व्यकतित्व जिन्होंने अपने जीवन में अनेको ऊंचाइयों को हासिल किया। आप भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के २७ वर्षो तक अध्यक्ष पद पर पदोन्नत रहे और सम्पूर्ण महाराष्ट्र के तीर्थों के विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया। आपने पूरे महाराष्ट्र के तीर्थक्षेत्रों, सिद्धक्षेत्रों को विकास की दिशा दी। आपके इस अनुकरणीय योगदान को इतिहास हमेशा याद करेगा।

आपने मांगीतुंगी में परमपूज्य गणनीप्रमुख आर्यिका१०५ श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से 108 फीट भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा उत्तीर्ण करने में सबसे बड़ा योगदान दिया और अपना संपूर्ण जीवन उसके लिए समर्पित कर दिया। इस विशालकाय मूर्ति का गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी नाम दर्ज हुआ है। इसका पूरा कार्य आपके समक्ष, आपके निगरानी, आपकी देखरेख मे ही हुआ। आप मूर्ति के शुरुआत से मूर्ति पूर्ण हुए तक आप एवं सौ. कुमकुमदेवी पापड़ीवाल धर्मपत्नी के साथ मांगीतुंगी में ही रहे। और आपके महामंत्री रहते यहाँ ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणक भी संपन्न हुई। जो कि जैन जगत का सबसे बड़ा पंचकल्याणक माना गया। इसके अतिरिक्त आप राजकीय क्षेत्र में पैठण में लगभग 5 बार नगर परिषद में चुनकर भी आए। देवी देवताओं के नाम पर जो पशु पक्षी की बली दी जाती थी उनको कई यात्रा में जाकर बचाया और रोका है। और जीव दया के इस कार्य में आपने अपनी जान की परवाह न करते हुए लाखों की संख्या में पशुओं को बचाकर आपने सम्पूर्ण समाज के समक्ष जीव दया का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर प्रेरित भी किया है।

1964 में पैठण में भगवान मुनिसुव्रतनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का संपूर्ण आयोजन आपके नेतृत्व में हुआ और भगवान के ऊपर विमान से पुष्पवृष्टि कराई गई आपने तत्कालीन

मुख्यमंत्री श्री वसंतराव नाईक के सानिध्य में अहिंसा सम्मेलन भी आपने पैठण में कराया था। पैठण अतिशय क्षेत्र भगवान मुनीसुव्रतनाथ के चरणो में आप ने लगभग 60 साल महामंत्री, कोषाध्यक्ष, विश्वस्त रहकर सेवा प्रदान की है। पदों पर रहकर क्षेत्र का संरक्षण, संवर्धन, विकास भी किया है। 1996 भगवान मुनीसुव्रत नाथ की 21 फ़ीट प्रतिमा का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा मांगीतुंगी महोत्सव आपके महामंत्री के नेतृत्व में हुआ। इस ऐतिहासिक पंचकल्याणक में आप ने तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मनोहर जोशी को आमंत्रित किया था और वह आए थे। और उन्होंने वहां दर्शन का लाभ लिया था।

जिनशासन की सेवा के साथ-साथ आपने अनेकों सामाजिक कार्यों को गति दी, आपके उद्योग, व्यापार, प्रतिष्ठान हैं। आप डॉक्टर रहे और लोगों की सेवा करते रहे है। रोटरी क्लब पैठण के फाउंडर प्रेसिडेंट, राजस्थान युवक मंडल के 15-20 साल अध्यक्ष, हिरवळ मंडळ के गत 40 सालों से अध्यक्ष पद पर आपने कार्य किया है।

आपका योगदान वास्तव में अमूल्य रहा है तीर्थक्षेत्र कमेटी के समस्त पदाधिकारी आपको अपना आदर्श मानते हैं और आपने अपने परिवार को भी अपने समान शिक्षा व संस्कार दिए हैं आपके सुपुत्र श्री संजय पन्नालाल पापड़ीवाल आपके ही पदचिन्हों पर तीर्थो की सेवा में तल्लीनता के साथ तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

डॉ. श्री पन्नालाल पापड़ीवाल जी के निधन से सम्पूर्ण देश की जैन समाज ने एक अनमोल रत्न खोया है यह क्षति सम्पूर्ण समाज के लिए अपूर्णनीय क्षति है। दिवंगत आत्मा के प्रति भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार अपनी भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करता है और शोकाकुल परिवार को अपनी संवेदनाएं समर्पित करता हैं एवं भगवान महावीर से प्रार्थना है आपकी भव्य आत्मा निकट भव में शास्वत सिद्धत्व को प्राप्त होवे।

ॐ शांति! शांति! शांति !

श्रद्धासुमन समर्पितकर्ता

जम्बूप्रसाद जैन	संतोष जैन पेंढारी
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री

एवं समस्त पदाधिकारीगण

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की बैठक में प्राचीन मंदिरों के भी संरक्षण का निर्णय

रामनगर: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तर प्रदेश उत्तराखंड अंचल की प्रथम साधारण सभा की बैठक में अंचल क्षेत्र के सभी तीर्थ एवं दिगम्बर जैन मंदिरों को जोड़ने एवं संरक्षण पर जोर दिया गया। प्रथम साधारण सभा की बैठक का आयोजन श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, रामनगर किला,आंवला में किया गया। बैठक का शुभारंभ राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन एवं जवाहर लाल जैन ने भगवान पार्श्वनाथ के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन ने कहा कि तीर्थों की रक्षा एवं अक्षुण्णता को बनाये रखने जैन समाज आगे बढ़कर सामूहिक प्रयास करते हुए, तीर्थक्षेत्र कमेटी के हाथों को मजबूती प्रदान कर एकजुटता का परिचय देना होगा। उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड कमेटी के अध्यक्ष जवाहरलाल जैन ने कहा कि तीर्थक्षेत्रों एवं प्राचीन जैन मंदिरों को भी तीर्थ क्षेत्र कमेटी के साथ जोड़ा जाएगा, जिससे जैन समाज के प्राचीन मंदिरों, इतिहास एवं संस्कृति व संस्कारों का संरक्षण होता रहे। कमेटी के संरक्षक एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद के कुलाधिपति सुरेश चंद्र जैन ने कहा कि तीर्थों का विकास जैन समाज की एकजुटता के लिए अत्यंत आवश्यक है, सबसे पहले हमें अपने परिवार को अपने बच्चों को सभी तीर्थों के दर्शन कराने चाहिए, तीर्थों पर आकर उसकी महिमा एवं इतिहास का अध्ययन करते हुए आने वाली पीढ़ी को इसकी सही जानकारी उपलब्ध करानी चाहिए। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड कमेटी के सभी पदाधिकारियों को शपथ ग्रहण सम्पन्न करायी गयी। इस अवसर पर कार्याध्यक्ष विनोद बिहारी जैन, महामंत्री सन्देश जैन, बैठक संयोजक श्री दिनेश जैन सेठी रामपुर, सह संयोजक श्री सम्भव जैन बहजोई सम्भल, श्री संजीव जैन हाथरस, मीनू जैन, गाजियाबाद, श्री सुनील जैन ललितपुर, श्री पुष्पेंद्र जैन काशीपुर, श्री नितेश जैन रुद्रपुर, श्री नमन जैन, मुरादाबाद, श्री अनिल जैन मुरादाबाद, श्री आदेश जैन, श्री अंकित जैन, श्री अनिल सोनी आदि उपस्थित रहे अध्यक्षता श्री जवाहर लाल जैन व संचालन श्री सन्देश जैन द्वारा किया गया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र के पदाधिकारियों ने किया संवाद
नए निर्माण से ज्यादा पुरातन का संरक्षण आवश्यक-आचार्य प्रज्ञासागर

भारत की संस्कृति को यदि जीवंत रखना है तो सबसे पहले अपने पुरातत्त्व का संरक्षण आवश्यक होगा। हम नित नए निर्माण तो करते जा रहे हैं, पर प्राचीन पुरा वैभव की ओर किसी का ध्यान नहीं है। भारत की धर्म और संस्कृति का आधार ही हमारा पुरातत्त्व है। दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों को आशीर्वाद देते हुए महावीर नगर द्वितीय में विराजमान आचार्य प्रज्ञासागर जी मुनिराज ने यह बातें कहीं।

जैन पत्रकार महासंघ के कोटा जिला संयोजक श्री पारस जैन (पत्रिका) ने जानकारी देते हुए बताया कि १२५ वर्षों से भी अधिक प्राचीन संस्था दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन एवं जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश तिजारिया, महामंत्री श्री उदयभान जैन, मंत्री श्री राकेश जैन 'चपलमन', कोषाध्यक्ष श्री दिलीप जैन सहित कई पदाधिकारी संयुक्त रूप से तीर्थक्षेत्र कमेटी के क्रियाकलापों एवं भूमिका से अवगत करवाने हेतु आचार्य श्री से मिले। इस अवसर पर श्री जम्बूप्रसाद गाजियाबाद वालों ने बताया कि तीर्थराज सम्मेदशिखर सहित कई तीर्थों पर चल रहे अदालती मुकदमों में से हम कई मामलों में समाधान की स्थिति में है।

आचार्य श्री ने इस अवसर पर सभी को आश्वस्त करते हुए कहा कि मेरा उद्देश्य सदैव प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार का रहा है और यही कारण है कि महाराष्ट्र के मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर ४४५ जीर्ण प्रतिमाओं का जीर्णोद्धार मेरी प्रेरणा से श्रावकों द्वारा करवाया जा रहा है। तीर्थक्षेत्र कमेटी को भी मेरा पूरा आशीर्वाद है कि आपकी समस्त योजनाओं के लिए में आपको यथा समय पूरा सहयोग प्रदान करूंगा। इसी अवसर पर कोटा समाज के बुद्धिजीवियों के साथ आगंतुक पदाधिकारियों ने संवाद भी किया जिसमें तीर्थ संरक्षण के प्रति समाज को जाग्रत करने व चल रहे लंबित मामलों के शीघ्र निस्तारण हेतु सभी से सुझाव मांगे गए।

जैन पत्रकार संघ के महामंत्री उदयभान जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि तीर्थ संरक्षण के क्रम में आगामी २२-२३ मार्च को अतिशय क्षेत्र जहाजपुर में दोनों संस्थाओं का संयुक्त अधिवेशन किया जा रहा है। इस अवसर पर जैन पत्रकार महासंघ के सदस्य श्री अनिल टोरा, श्री राजेश पिडावा, श्री पारसमणि, श्री शैलेन्द्र, श्री राजेश बंटी जैन समाज कोटा के कार्यध्यक्ष एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष राजस्थान प्रान्त के जे के जैन भी उपस्थिति रहे। अंत में कोटा जैन समाज के अध्यक्ष श्री विमलचंद जैन (नाता) ने सभी का आभार प्रकट किया।

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, गुलालवाड़ी मुंबई के २०० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आज़ाद मैदान, मुंबई में हुआ भव्य पंचकल्याणक महोत्सव संपन्न

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर दहेरासर गुलालवाड़ी मुंबई के २०० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आज़ाद मैदान मुंबई में मुनिश्री अमोघकीर्ति एवं मुनि श्री अमरकीर्ति जी महाराज के सान्निध्य में पंचकल्याणक महोत्सव संपन्न हुआ जिसमें भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन ध्वजारोहण कर्ता के रूप में उपस्थित रहे साथ ही राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री संजय पन्नालाल पापड़ीवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नीलम अजमेरा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी एवं जीर्णोद्धार समिति के चेयरमेन श्री अनिल जमगे उपस्थित रहे। गुलालवाड़ी मंदिर के मैनेजिंग ट्रस्टी एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री अशोक दोशी, मुंबई के तत्वावधान में यह आयोजन दिनांक ०३ फरवरी से ०७ फरवरी २०२५ तक संपन्न हुआ।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक तैयार कर रही है आपका गुडलक

घर–घर
गुल्लक योजना

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्श सागरजी मुनिराज ने ऋषभ विहार दिल्ली में 23 जनवरी को धर्मसभा में कहा भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के द्वारा गुल्लक योजना चलायी जा रही है। ध्यान रहे, यह गुल्लक योजना आपको आर्थिक सहयोग के साथ–साथ तीर्थों के प्रति भावनात्मक दृष्टि से भी जोड़ने का सरल–सहज उपाय है। हमें चाहिए कि हम अधिक से अधिक संख्या में तीर्थों की वंदना करें। तीर्थों पर स्वयं पहुंचे और गुल्लक योजना के तहत पहुंचायें। तीर्थक्षेत्र कमेटी की यह गुल्लक आपके भाग्य को गुड–लक बनाने के लिये कारगर सिद्ध होगी।

तीर्थों की सुरक्षा के लिये सहयोग करने के लिये आज ही सम्पर्क करें:–

9833671770, 9109228683

M-22

तीर्थों की सुरक्षा के लिये इस QR कोड को स्केन कर दान राशि सीधे अपने मोबाइल के माध्यम से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई को भेज सकते हैं।